■ अप्लास्टिक एनीमिया के उपचार के लिए होम्योपैथी ■ नींबू पानी पीने के फायदे

RNI No. MPHIN/2011/40959
डाक पंजीयन क्रमांक MP/IDC/1395/2024-2026
प्रत्येक माह की 6 तारीख को प्रकाशित होकर 10 तारीख को डाक प्रेषण की जाती है।

राष्ट्रीय मासिक स्वास्थ्य पत्रिका

सेहत एवं सूरत

अप्रैल 2025 | वर्ष-14 | अंक-05

मूल्य ₹60

पत्रिका नहीं संपूर्ण अभियान
जो रखे पूरे परिवार का ध्यान...

होम्योपैथी विशेषांक

खूनी पसीने जैसी दुर्लभ बीमारी का सफल होम्योपैथिक इलाज

'अलौकिक मध्यप्रदेश' पुस्तक का भव्य विमोचन

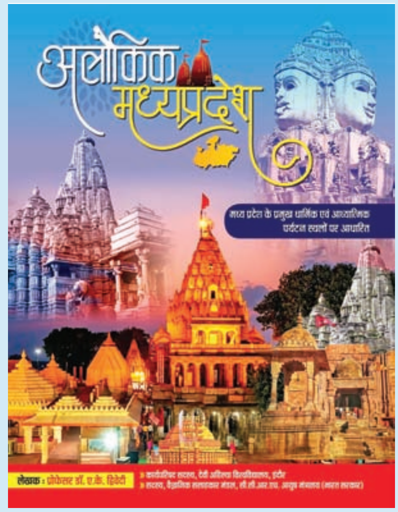

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने किया लोकार्पण

मध्यप्रदेश के प्रमुख धार्मिक स्थलों पर आधारित प्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक और सीसीआरएच, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के सदस्य डॉ. ए.के. द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तक "अलौकिक मध्यप्रदेश" का लोकार्पण मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कर-कमलों द्वारा भव्य समारोह में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा, "आज के दौर में 'अलौकिक मध्यप्रदेश' जैसी पुस्तकों की अत्यंत आवश्यकता है। धार्मिक पर्यटन के बढ़ते महत्व को देखते हुए यह पुस्तक न केवल श्रद्धालुओं बल्कि प्रदेश आने वाले हर पर्यटक के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगी।" लेखक डॉ. ए.के. द्विवेदी ने पुस्तक के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मध्यप्रदेश सरकार द्वारा धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास की दिशा में किए जा रहे महत्वपूर्ण कार्यों से प्रेरित होकर उन्होंने इस पुस्तक की रचना की है। उन्होंने बताया कि "अलौकिक मध्यप्रदेश" में प्रदेश के प्रमुख और कम चर्चित धार्मिक स्थलों का आकर्षक सचित्र संकलन प्रस्तुत किया गया है, जो पाठकों के लिए न केवल ज्ञानवर्धक है, बल्कि यात्रा के दौरान उपयोगी भी सिद्ध होगी। डॉ. द्विवेदी ने आगे बताया कि "पुस्तक के प्रकाशन के बाद अब तक पाठकों की सराहना प्राप्त हो रही है। कई सुधि पाठकों ने सुझाव दिए हैं कि मध्यप्रदेश के कुछ और अल्पज्ञात धार्मिक स्थलों को भी अगली कड़ी में शामिल किया जाए।

सेहत एवं सूरत

अप्रैल 2025 | वर्ष-14 | अंक-05

प्रेरणास्रोत
पं. रमाशंकर द्विवेदी
डॉ. पी.एस. हार्डिया

मार्गदर्शक
डॉ. भूपेन्द्र गौतम
डॉ. पी.एन. मिश्रा

प्रधान संपादक
सरोज द्विवेदी

संपादक
डॉ. ए.के. द्विवेदी
9826042287

सह संपादक
डॉ. वैभव चतुर्वेदी
डॉ. कनक चतुर्वेदी
प्रभात शुक्ला
कोमल शुक्ला
अथर्व द्विवेदी

वरिष्ठ प्रबन्ध संपादक
राकेश यादव - 09424083040
दीपक उपाध्याय - 09977759844

प्रबन्ध संपादक
विनय पाण्डेय - 09893519287
डॉ. जितेंद्र पुरी - 07898304927

संपादकीय टीम
डॉ. आर.के. मिश्रा, डॉ. डी.एन. मिश्रा
डॉ. राजेश गुप्ता, डॉ. ऋषभ जैन
डॉ. आशीष तिवारी, डॉ. ब्रज किशोर तिवारी

लेआउट डिजाइनर
राजकुमार

वेबसाइट एवं नेटमार्केटिंग
पीयुष पुरोहित

प्रसार ऑफिस :
एडवांस्ड आयुष वेलनेस सेंटर
28 ए, ग्रेटर ब्रजेश्वरी,
निकट करणावत भोजनालय,
पिपलियाहाना, इंदौर (म.प्र.)
फोन: 0731-4989287
मोबा.: 98935-19287

Visit us : www.sehatevamsurat.com
www.sehatsurat.com

अंदर के पन्नों में...

12 सिकल सेल एनीमिया और होम्योपैथी इलाज

14 घुटने के दर्द का होम्योपैथिक उपचार: प्रभावी समाधान

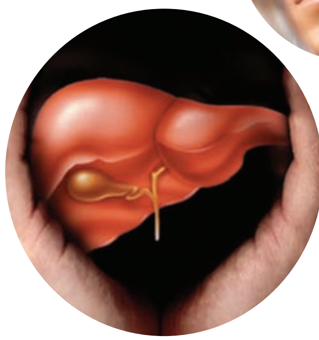

17 सौंदर्य के लिए होम्योपैथी

29 जिगर का जिगर होम्योपैथी

34 ज्यादा बैठे रहने से भी होती हैं ये बीमारियां...

41 बड़ी तरावट वाली ककड़ी

40 सौंदर्य बढ़ाइये फूलों से

हेड ऑफिस : 8/9, मयंक अपार्टमेंट, मनोरमागंज, गीताभवन मंदिर रोड, इन्दौर
मोबाइल 98260 42287, 94240 83040
email : sehatsuratindore@gmail.com, drakdindore@gmail.com

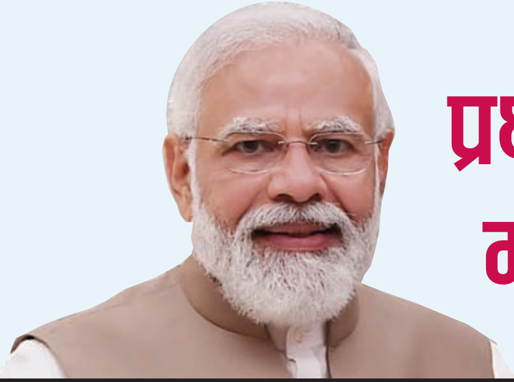

प्रधानमंत्री मोदी के

'मन की बात'

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार।

आज बहुत पावन दिन पर मुझे आपसे 'मन की बात' करने का अवसर मिला है। आज चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि है। आज से चैत्र नवरात्र की शुरुआत हो रही है। आज से भारतीय नववर्ष का भी आरंभ हो रहा है। इस बार विक्रम संवत 2082 (दो हजार बयासी) शुरू हो रहा है।

साथियो, आज कर्नाटका में, आंध्र प्रदेश, तेलंगना में उगादि का पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जा रहा है। आज ही महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा मनाया जा रहा है। विविधता भरे हमारे देश में, अलग-अलग राज्यों में अगले कुछ दिन में असम में 'रोंगाली बिहू', बंगाल में 'पोइला बोइशाख', कश्मीर में 'नवरेह' का उत्सव मनाया जाएगा। इसी तरह, 13 से 15 अप्रैल के बीच देश के अलग-अलग हिस्सों में त्योहारों की जबरदस्त धूम दिखेगी। इसे लेकर भी उत्साह का माहौल है और ईद का त्योहार तो आ ही रहा है। यानी ये पूरा महीना त्योहारों का है, पर्वों का है। मैं देश के लोगों को इन त्योहारों की बहुत-बहुत बधाई देता हूं। हमारे ये त्योहार भले ही अलग-अलग क्षेत्रों में हो लेकिन ये दिखाते हैं कि भारत की विविधता में भी कैसे एकता पिरोई हुई है। इस एकता की भावना को हमें निरंतर मजबूत करते चलना है।

साथियो, जब परीक्षाएं आती हैं, तो युवा साथियों के साथ मैं 'परीक्षा पे चर्चा' करता हूं। अब परीक्षाएं हो चुकी हैं। बहुत सारे स्कूलों में तो दोबारा class शुरू होने की तैयारी हो रही है। इसके बाद गर्मी की छुट्टियों का समय भी आने वाला है। साल के इस समय का बच्चों को बहुत इंतजार रहता है। मुझे तो अपने बचपन के दिन याद आ गए जब मैं और मेरे दोस्त दिनभर कुछ-ना-कुछ उत्पात मचाते रहते थे। लेकिन साथ ही हम कुछ constructive भी करते थे, सीखते भी थे। गर्मियों के दिन बड़े होते हैं, इसमें बच्चों के पास करने को बहुत कुछ होता है। यह समय किसी नई hobby को अपनाने के साथ ही अपने हुनर को और तराशने का भी है।

मेरे प्यारे देशवासियो, गर्मी का मौसम शुरू होते ही शहर-शहर, गांव-गांव, पानी बचाने की तैयारियां भी शुरू हो जाती हैं। अनेक राज्यों में water harvesting से जुड़े कामों ने, जल संरक्षण से जुड़े कामों ने नई तेजी पकड़ी है। जलशक्ति मंत्रालय और अलग-अलग स्वयंसेवी संस्थाएं इस दिशा में काम कर रही हैं। देश में हजारों कृत्रिम तालाब, check dam, borewell recharge, community soak pit का निर्माण हो रहा है। हर साल की तरह इस बार भी 'catch the rain' अभियान के लिए कमर कस ली गई है। ये अभियान भी सरकार का नहीं बल्कि समाज का है, जनता-जनार्दन का है। जल संरक्षण से ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को जोड़ने के लिए जल संचय जन–भागीदारी अभियान भी चलाया जा रहा है। प्रयास यही है कि जो प्राकृतिक संसाधन हमें मिले हैं, उसे हमें अगली पीढ़ी तक सही सलामत पहुंचाना है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज fitness के साथ-साथ count का बड़ा role हो गया है। एक दिन में कितने steps चले इसका count, एक दिन में कितनी calories खायी इसका count, कितनी calories burn की इसका count, इतने सारे counts के बीच, एक और countdown शुरू होने वाला है। International Yoga Day का countdown। योग दिवस में अब 100 दिन से भी कम समय रह गया है। अगर आपने अपने जीवन में अब तक योग को शामिल नहीं किया है तो अब जरूर कर लीजिए अभी देर नहीं हुई है। 10 साल पहले 21 जून 2015 को पहला अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया था। अब तो इस दिन ने योग के एक विराट महोत्सव का रूप ले लिया है। मानवता को भारत की ओर से यह एक ऐसा अनमोल उपहार है, जो भविष्य की पीढ़ी के बहुत काम आने वाला है। साल 2025 के योग दिवस की theme रखी गई है, 'Yoga for One Earth One Health'. यानि हम योग के जरिए पूरे विश्व को स्वस्थ बनाने की कामना करते हैं।

साथियो, यह हम सबके लिए गर्व करने वाली बात है कि आज हमारे योग और traditional medicine को लेकर पूरी दुनिया में जिज्ञासा बढ़ रही है। बड़ी संख्या में युवा योग और आयुर्वेद को wellness का एक बेहतरीन माध्यम मानकर इसे अपना रहे हैं। अब जैसे South America का देश Chile है। वहां आयुर्वेद तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। पिछले साल मैं Brazil की यात्रा के दौरान Chile के राष्ट्रपति से मिला था। आयुर्वेद की इस popularity को लेकर हमारे बीच काफी चर्चा हुई थी। मुझे Somos India नाम की team के बारे में पता चला है। Spanish में इसका अर्थ है – We are India. यह टीम करीब एक दशक से योग और आयुर्वेद को बढ़ावा देने में जुटी है। उनका focus treatment के साथ-साथ educational programmes पर भी है। वे आयुर्वेद और योग से संबंधित जानकारियों को Spanish language में translate भी करवा रहे हैं। सिर्फ पिछले वर्ष की बात करें, तो उनके अलग-अलग events और courses में करीब 9 हजार लोगों ने हिस्सा लिया था। मैं इस team से जुड़े सभी लोगों को उनके इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे साथियो, आप मुझे हमेशा की तरह अपने विचार, अनुभव और जानकारियां साझा करते रहें, हो सकता है, आपके आसपास कुछ ऐसा हो रहा हो जो सामान्य लगे, लेकिन दूसरों के लिए वो विषय बहुत रोचक और नया होगा। अगले महीने हम फिर मिलेंगे। आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।

ॐ भूर्भुवः स्वः

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःखभाग्भवेत्।।

सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें, सभी मंगलमय घटनाओं के साक्षी बनें और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।

संपादकीय

संपादक

डॉ. ए.के. द्विवेदी

सदस्य

- वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड
  सी.सी.आर.एच., आयुष मंत्रालय, भारत सरकार
- कार्यपरिषद
  देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

- फिजियोलॉजी एवं बायोकेमेस्ट्री
  एसकेआरपी गुजराती होम्योपैथिक
  मेडिकल कॉलेज, इंदौर, मध्यप्रदेश

संचालक

- एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर एवं
  होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्रा. लि., इंदौर
- एडवांस्ड आयुष वेलनेस सेंटर, इंदौर
- एडवांस योग एवं नेचुरोपैथी हॉस्पिटल, इंदौर
- एडवांस इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल साईंसेस, इंदौर

मो.: 9826042287
9424083040, 98935-19287

स्वच्छ भारत
स्वस्थ भारत

होम्योपैथी - व्यक्ति के संपूर्ण स्वास्थ्य को संतुलित रखने में भी महत्वपूर्ण

स्वास्थ्य मानव जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। समय के साथ चिकित्सा विज्ञान ने अनेक प्रगति की हैं, और होम्योपैथी इसी यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। यह चिकित्सा पद्धति न केवल रोग के लक्षणों को ठीक करने में सहायक है, बल्कि यह व्यक्ति के संपूर्ण स्वास्थ्य को संतुलित रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आज, जब आधुनिक चिकित्सा पद्धतियाँ विभिन्न जटिलताओं और दुष्प्रभावों का सामना कर रही हैं, होम्योपैथी एक सुरक्षित, प्रभावी और संपूर्ण चिकित्सा समाधान के रूप में उभर रही है। यह चिकित्सा न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक और भावनात्मक संतुलन को बनाए रखने में भी सहायक होती है।

भारत में होम्योपैथी को विशेष स्थान प्राप्त है। होम्योपैथी के वैज्ञानिक और व्यावहारिक पहलुओं को जनमानस से परिचित कराया जाए।

यह अंक उन चिकित्सकों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए एक उपयोगी स्रोत होगा जो होम्योपैथी को न केवल एक चिकित्सा प्रणाली के रूप में, बल्कि एक समग्र स्वास्थ्य दर्शन के रूप में अपनाना चाहते हैं।

आशा है कि यह विशेषांक होम्योपैथी चिकित्सा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा और समाज में स्वास्थ्य के प्रति एक नई दृष्टि प्रदान करेगा।

खूनी पसीने जैसी दुर्लभ बीमारी का सफल होम्योपैथिक इलाज

दुनिया में कई गंभीर और दुर्लभ बीमारियाँ हैं, जिनका इलाज करने में आधुनिक चिकित्सा भी असमर्थ रही है। लेकिन होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान ने कई असंभव माने जाने वाले मामलों में सफलता प्राप्त की है। भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के केंद्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिक सलाहकार बोर्ड के सदस्य तथा कार्यपरिषद सदस्य, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर एवं वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. ए. के. द्विवेदी ऐसे ही विशेषज्ञों में से एक हैं, जिन्होंने कई घातक बीमारियों के उपचार में सफलता हासिल की है। इसी उल्लेखनीय योगदान के लिए मध्य प्रदेश के महामहिम राज्यपाल माननीय मंगू भाई पटेल ने उन्हें 'मध्य प्रदेश रत्न अलंकरण सम्मान 2022' से सम्मानित किया।

क्या आपने कभी सुना है कि कोई व्यक्ति पसीने की जगह खून बहाए? यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि एक दुर्लभ बीमारी हीमैटोहाइड्रोसिस (खूनी पसीना) है, जिसे होम्योपैथी से मिला समाधान

दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं, जिन्हें कई तरह की अजीबोगरीब बीमारियां रहती हैं. कुछ बीमारी ऐसी सामने आ जाती है जो मेडिकल साइंस को भी हैरान कर देती है. इसी तरह की अजीब बीमारी का मामला इंदौर में सामने आया है जिसने दुनियाभर के डॉक्टर्स को परेशान कर दिया है। इंदौर की रहने वाली 17 साल की एक लड़की के शरीर से पसीने की जगह खून निकलता था। जी हां, किसी भी तरह की फिजिकल एक्टिविटी करने के बाद इस लड़की के माथे से लेकर हथेलियों तक से खून निकलने लगता था। जिसका उपचार इंदौर के होम्योपैथिक स्पेशलिस्ट डॉ ए के द्विवेदी ने होम्योपैथी उपचार से बच्ची को इस अनोखी बीमारी से मुक्त करने में मदद की।

हेमैटोहाइड्रोसिस बीमारी से पीड़ित थी लड़की

डॉ ए के द्विवेदी के अनुसार लड़की को हेमैटोहाइड्रोसिस नाम की एक बीमारी है, जो करोड़ों लोगों में से किसी एक में ही पाई जाती है। यह बीमारी होने के कारण लड़की की बॉडी से पसीने की जगह खून निकलता था डॉ एके द्विवेदी ने बताया कि आपने देखा होगा कि लोगों को हाथ और चेहरे के साथ में पूरे शरीर में पसीना आता है. हाईड्रोसिस यानी कि साधारण पसीना ही ज्यादातर लोगों को आता है तो लोग परेशान हो जाते हैं. लेकिन डॉक्टर द्विवेदी के पास फरवरी 2021 को एक ऐसा केस आया जिसमें मरीज को ब्लड का पसीना आता है. डॉक्टर ने कहा कि इस तरह का केस देश में दिल्ली में पहले मिल चुका था, जो कि लड़की ही थी.

पसीने की जगह ब्लड आना शुरू हो जाता था

दरअसल लड़की के परिजन भी इस बीमारी को लेकर काफी परेशान हो गए थे, क्योंकि किसी भी समय बच्चे को पसीने की जगह ब्लड आना शुरू हो जाता था। उन्होंने बताया कि सबसे खास बात यह हो गई कि पड़ोसी इससे देवी प्रकोप झाड़-फूंक करने की बात करते थे। परिजनों ने कई विशेष डॉक्टरों को भी दिखाया लेकिन किसी तरह का आराम लड़की को नहीं मिला। वहीं स्कूल के प्रिंसिपल ने भी लड़की को स्कूल आने से मना कर दिया। जिसके बाद

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के पहले

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के बाद

उसको मानसिक आघात पहुंचने का खतरा भी परिजनों को हो रहा था।

कम खर्च में पूरा इलाज हुआ

इंदौर के डॉक्टर डॉ. वैभव चतुर्वेदी (एमडी, सायकाइट्री) आप इंडेक्स मेडिकल कॉलेज, इंदौर में प्रोफ़ेसर (वर्तमान में मनोचिकित्सक कोकिलाबेन अंबानी अस्पताल, इंदौर) भी हैं, दोनों ने मिलकर पीड़ित बच्ची से बात किया और परिजनों से बात कर होम्योपैथिक के साथ सायकाइट्री पॉइंट ऑफ व्यू से भी देखा डॉ वैभव का ऐसा मानना था कि इसमें सायकाइट्री के लक्षण नहीं दिखाई दिए। कहीं ना कहीं ब्लड प्रेशर बढ़ जाने के चलते इस तरह की परेशानी हो रही थी, जिसके बाद बच्ची को होम्योपैथिक ट्रीटमेंट शुरू किया गया। ट्रीटमेंट फरवरी 2021 में शुरू किया गया और जुलाई आते-आते उसका अटैक आना बंद हो गया और नवंबर 2021 के बाद ब्लड का या किसी तरह का चेहरे का घाव नहीं हुआ।

फिलहाल अभी बच्ची पूरी तरह से स्वस्थ है। वहीं इस पूरी अनोखी बीमारी के ठीक होने के बाद परिवार में काफी खुशी का माहौल है। खास बात यह है कि कम समय में इस खतरनाक कही जाने वाली बीमारी को काबू में कर लिया गया।

झारखंड का बच्चा भी हुआ ठीक, परिवार ने किया आभार व्यक्त

इसी बीमारी से झारखंड के एक छोटे बच्चे का जीवन भी कठिनाइयों से घिरा हुआ था। परिवार इस अजीबोगरीब समस्या से बेहद चिंतित था, उन्हें लग रहा था कि उनका बच्चा कभी सामान्य जीवन नहीं जी पाएगा। परंतु डॉ. द्विवेदी के होम्योपैथिक इलाज से 10 माह की चिकित्सा के बाद बच्चा पूरी तरह स्वस्थ हो गया।

अब पिछले 6 महीनों से उसे कोई ब्लीडिंग (खूनी पसीना) नहीं हुआ और वह हॉस्टल में रहकर अपनी पढ़ाई सफलतापूर्वक जारी रखे हुए है। उसके माता-पिता अब बेहद प्रसन्न हैं और डॉ. द्विवेदी को देवदूत मानते हैं। वे कहते हैं, "डॉ. द्विवेदी केवल चिकित्सक ही नहीं, बल्कि हमारे लिए भगवान का अंश हैं। उनका यह योगदान हम जीवनभर याद रखेंगे।"

होम्योपैथी ने फिर किया चमत्कार

हीमैटोहाइड्रोसिस जैसी दुर्लभ बीमारियों के इलाज में मिली सफलता यह साबित करती है कि होम्योपैथी चिकित्सा विज्ञान में अपार संभावनाएँ हैं। जब आधुनिक चिकित्सा किसी बीमारी को लाइलाज मानकर हार मान लेती है, तब भी होम्योपैथी में समाधान खोजा जा सकता है। डॉ. ए. के. द्विवेदी की यह उपलब्धि न केवल चिकित्सा जगत के लिए प्रेरणादायक है, बल्कि उन मरीजों के लिए एक नई आशा की किरण भी है, जो असाध्य बीमारियों से जूझ रहे हैं डॉ. ए. के. द्विवेदी द्वारा किए गए इस सफल इलाज के बाद, अब पूरे देश से हीमैटोहाइड्रोसिस से पीड़ित मरीज उनके पास इलाज के लिए आ रहे हैं। यह होम्योपैथी चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो मेडिकल साइंस को एक नई दिशा प्रदान कर रही है।

डॉ. ए.के. द्विवेदी, वरिष्ठ होम्योपैथिक चिकित्सक, इंदौर के अनुसार, होम्योपैथी में इस समस्या का सम्पूर्ण, सुरक्षित और बिना किसी साइड इफेक्ट के उपचार संभव है। होम्योपैथी में इलाज रोगी के मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक लक्षणों के आधार पर किया जाता है।

ज्यादा पसीना आता है यानी हाइपरहाइड्रोसिस होम्योपैथी में मुमकिन है इलाज

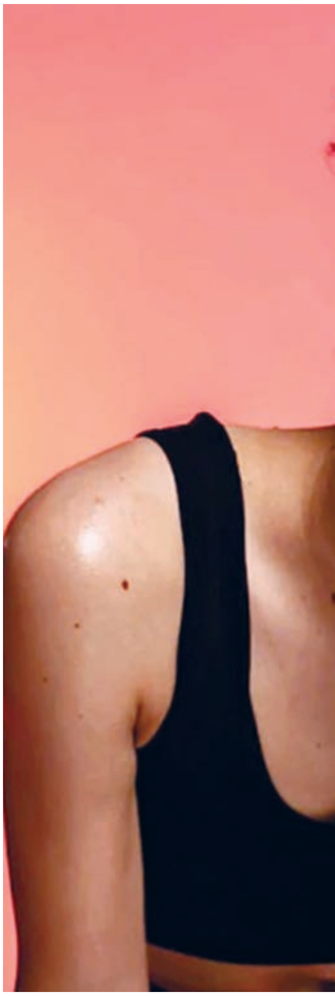

हाइपरहाइड्रोसिस एक ऐसी स्थिति है जिसमें शरीर के कुछ हिस्सों में अत्यधिक पसीना आता है, जो सामान्य से कहीं ज्यादा होता है। यह स्थिति अक्सर बिना किसी शारीरिक गतिविधि या गर्मी के कारण होती है, और इससे व्यक्ति को असहजता और सामाजिक मानसिक दबाव का सामना करना पड़ सकता है। हाइपरहाइड्रोसिस के कारण शरीर के पसीने की ग्रंथियाँ अत्यधिक सक्रिय हो जाती हैं, जो पसीने का उत्पादन सामान्य से अधिक करने लगती हैं। यह बीमारी दो प्रकार की होती है- प्राथमिक और द्वितीयक। प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस बिना किसी अन्य मेडिकल कारण के होती है, जबकि द्वितीयक हाइपरहाइड्रोसिस किसी अन्य बीमारी या स्थिति के कारण हो सकती है। इस बीमारी के कारणों में आनुवांशिक तत्व, तंत्रिका तंत्र की असामान्यता, या अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं।

हाइपरहाइड्रोसिस दो प्रमुख प्रकारों में बाँटी जाती है- प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस और द्वितीयक हाइपरहाइड्रोसिस। इन दोनों प्रकारों के बीच अंतर मुख्य रूप से कारणों और प्रभावों में होता है। आइए, इन दोनों प्रकारों को विस्तार से समझें-

प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस

प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस एक स्थिती है जहाँ शरीर के कुछ खास हिस्सों में अत्यधिक पसीना आता है, और इसका कोई स्पष्ट शारीरिक कारण नहीं होता। यह अधिकतर अनुवांशिक होता है।

प्रभावित क्षेत्र- यह आमतौर पर हथेलियाँ, पैर, अंडरआर्म्स (बगल), और चेहरे के हिस्सों में पसीने की अधिकता का कारण बनता है।

द्वितीयक हाइपरहाइड्रोसिस

द्वितीयक हाइपरहाइड्रोसिस उस स्थिति को कहा जाता है जहाँ अत्यधिक पसीना किसी शारीरिक बीमारी, दवाई, या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के कारण आता है।

प्रभावित क्षेत्र- इसमें पसीने की अधिकता पूरे शरीर में हो सकती है, न कि सिर्फ हाथ-पैर या बगल जैसे सीमित हिस्सों में।

हाइपरहाइड्रोसिस के कारण

हाइपरहाइड्रोसिस का मुख्य कारण अत्यधिक पसीना आना है, लेकिन इसके पीछे कई विभिन्न कारण हो सकते हैं। ये कारण शारीरिक, मानसिक और आनुवांशिक हो सकते हैं। हाइपरहाइड्रोसिस के कारणों को दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है- प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस (जिसका कोई स्पष्ट शारीरिक कारण नहीं होता) और द्वितीयक हाइपरहाइड्रोसिस (जो किसी अन्य शारीरिक समस्या से संबंधित होता है)।

आनुवांशिक कारण: हाइपरहाइड्रोसिस का सबसे आम कारण आनुवांशिकता होता है। जब परिवार में कोई व्यक्ति इस बीमारी से पीड़ित होता है, तो यह अन्य परिवार के सदस्यों को भी प्रभावित कर सकता है। यह प्राथमिक हाइपरहाइड्रोसिस के अंतर्गत आता है, जिसमें कोई शारीरिक बीमारी नहीं होती, बल्कि यह सिर्फ एक विशेष जीन के कारण होता है।

मानसिक और भावनात्मक कारण: तनाव और चिंता- मानसिक तनाव, घबराहट और चिंता हाइपरहाइड्रोसिस को बढ़ा सकते हैं। जब व्यक्ति घबराता है या तनाव महसूस करता है, तो उसका शरीर अधिक पसीना छोड़ता है।

नर्वसनेस- किसी सार्वजनिक स्थान पर बोलने, मुलाकातों या अन्य सामाजिक स्थितियों में नर्वसनेस होने पर भी पसीने की मात्रा बढ़ सकती है।

शारीरिक स्वास्थ्य समस्याएँ

मधुमेह- रक्त में शर्करा (ग्लूकोज) की उच्च मात्रा हाइपरहाइड्रोसिस का कारण बन सकती है। यह स्थिति शरीर के पसीने की प्रक्रिया को प्रभावित करती है।

हाइपरथायरायडिज्म- थायरॉयड ग्रंथि द्वारा अत्यधिक हार्मोन का स्राव होने के कारण शरीर की मेटाबोलिक क्रियाएँ तेज़ हो जाती हैं, जिससे अधिक पसीना आ सकता है।

गर्मियाँ- बुखार या किसी संक्रमण के कारण शरीर का तापमान बढ़ जाता है, जिससे अत्यधिक पसीना आता है।

मधुमेह- रक्त में ग्लूकोज के उच्च स्तर के कारण शरीर अधिक पसीना छोड़ता है।

दवाइयाँ और चिकित्सा उपचार

दवाइयों के दुष्प्रभाव- कुछ दवाइयाँ, जैसे

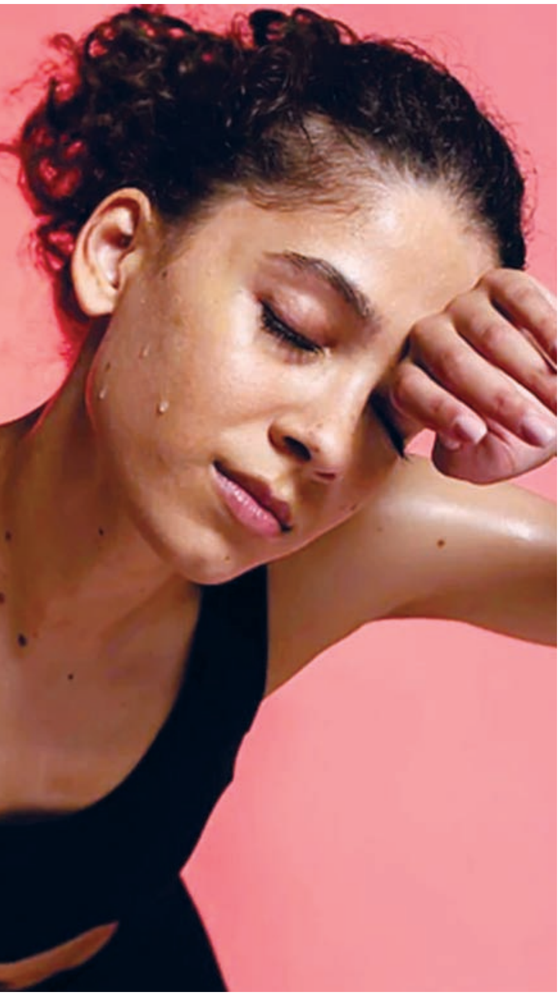

एंटीडिप्रेसेंट्स, स्टेरॉयड, या रक्तदाब को नियंत्रित करने वाली दवाइयाँ, पसीने के उत्पादन को बढ़ा सकती हैं।

हॉर्मोनल परिवर्तन- गर्भावस्था, मासिक धर्म या मेनोपॉज़ जैसे हॉर्मोनल बदलावों के कारण पसीना बढ़ सकता है।

मेडिकल उपचार- कुछ उपचार, जैसे की कीमोथेरेपी, के दौरान शरीर में पसीना बढ़ सकता है।

संक्रमण और अन्य शारीरिक स्थितियाँ

संक्रमण- कुछ संक्रमण, जैसे तपेदिक या बुखार, शरीर में अधिक पसीना आने का कारण बन सकते हैं।

अल्सर- पाचन तंत्र से जुड़ी समस्याएँ, जैसे अल्सर, शरीर में अधिक पसीना छोड़ने का कारण बन सकती हैं।

जीवनशैली और पर्यावरणीय कारक

गर्मी और आर्द्रता- अत्यधिक गर्मी और आर्द्रता में शरीर स्वाभाविक रूप से पसीना छोड़ता है, ताकि शरीर को ठंडा रखा जा सके। हालांकि, यह सामान्य स्थिति है, लेकिन कुछ लोगों में यह सामान्य से अधिक होता है।

अत्यधिक शारीरिक गतिविधि- अत्यधिक व्यायाम या शारीरिक मेहनत करने से भी पसीना बढ़ सकता है।

हाइपरहाइड्रोसिस के लक्षण

हाइपरहाइड्रोसिस के लक्षण मुख्य रूप से अत्यधिक पसीने से संबंधित होते हैं, लेकिन यह लक्षण व्यक्ति के शरीर के विभिन्न हिस्सों में भिन्न हो सकते हैं। इस स्थिति में पसीना बिना किसी स्पष्ट कारण (जैसे गर्मी या शारीरिक मेहनत) के आता है, और यह जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। आइए, हाइपरहाइड्रोसिस के प्रमुख लक्षणों को विस्तार से समझते हैं-

अत्यधिक पसीना-यह सबसे सामान्य लक्षण है और हाइपरहाइड्रोसिस का मुख्य संकेत है। पसीना सामान्य से बहुत अधिक होता है, और यह किसी विशेष कारण के बिना होता है। हाथों, पैरों, बगल, और चेहरे पर अत्यधिक पसीना।

प्रभावित क्षेत्र- यह पसीना आमतौर पर शरीर के विशेष हिस्सों में होता है, जैसे हथेलियाँ, पैर, बगल (अंडरआर्म्स), और माथा।

पसीना आने का असामान्य समय

हाइपरहाइड्रोसिस वाले व्यक्ति को पसीना बिना किसी बाहरी कारण (जैसे गर्मी, शारीरिक मेहनत, या व्यायाम) के आता है।

रात में पसीना- कई बार यह समस्या रात में सोते समय भी होती है, जिससे व्यक्ति को जागने के बाद गीला महसूस होता है।

तनाव और चिंता- तनाव, घबराहट या अन्य भावनात्मक कारणों से पसीना अचानक बढ़ सकता है, जो आमतौर पर हाइपरहाइड्रोसिस का लक्षण होता है।

सामाजिक और मानसिक असर

आत्मविश्वास में कमी - अत्यधिक पसीना आने से व्यक्ति को सार्वजनिक स्थानों या सामाजिक आयोजनों में शर्मिंदगी का सामना करना पड़ सकता है।

सामाजिक हिचकिचाहट - पसीने से भीगे हाथों के कारण दूसरों से हाथ मिलाने में कठिनाई हो सकती है, और बगलों में पसीना

होम्योपैथी इलाज

होम्योपैथी कैसे अत्यधिक पसीने को नियंत्रित करने और कम करने में मदद कर सकती है

कैल्केरिया कार्ब 200 - अत्यधिक सिर के पसीने के लिए प्रभावी, यहाँ तक कि सोते समय भी, साथ ही उबले अंडे, चाक, चूना और पेंसिल की अनोखी लालसा के लिए भी। यह पुरानी कब्ज का भी इलाज करता है।

सिलिशिया 200 - हाथ, पैर और बगलों में बदबूदार पसीने के लिए सर्वोत्तम, पसीने से तर हाथों के कारण लिखने और पकड़ने में कठिनाई।

मर्क्युरियस सोल. 30 - पूरे शरीर में पसीना आना, जो रात में बढ़ जाता है, दुर्गंधयुक्त या खट्टी गंध के साथ, कमजोरी, प्यास में वृद्धि और अत्यधिक लार आना आदि लक्षणों के साथ होता है।

सोरिनम 200 और सल्फर 200 - दोनों ही दवाएं अत्यधिक, अत्यधिक आक्रामक पसीने के लिए उपयुक्त हैं। सोरिनम गर्म मौसम में भी ठंड के प्रति असहिष्णुता के खिलाफ प्रभावी है, जबकि सल्फर उन लोगों के लिए है जो गर्मी के प्रति संवेदनशील हैं, जिनके हथेलियों, तलवों और सिर में अत्यधिक गर्मी और पसीना आता है।

बोविस्टा 30 - बगलों से आने वाले प्याज जैसे पसीने को नियंत्रित करता है।

हेपर सल्फ 30 - बदबूदार बगल के पसीने का इलाज करता है जो कपड़ों पर पीले दाग छोड़ देता है।

ग्रैफ़ाइट्सि 30 - पसीने के कारण पैर की उंगलियों में दरारें पड़ जाती हैं तथा दुर्गंध आती है, इसके लिए निर्धारित है।

एसिटिक एसिड 30 - तीव्र ज्वर में अत्यधिक पसीना आना, तीव्र प्यास होना, किन्तु पीने की इच्छा न होना, इसके लिए उपयोगी है।

पेट्रोलियम 30 - अप्रिय पसीने का उपचार करता है, जो विशेष रूप से कमरे में प्रवेश करते समय महसूस होता है।

बेन्जोइक एसिड 30 - घोड़े के मूत्र के समान गहरे रंग के, दुर्गन्धयुक्त मूत्र के साथ अत्यधिक पसीना आने पर प्रभावी।

पल्सेटिला नाइग. 30 - स्थानीयकृत पसीने के लिए उपयुक्त, जिसमें शरीर का एक भाग गर्म और दूसरा भाग ठंडा हो।

सैनिकुला 30 - दुबले-पतले बच्चों के सिर पर रात में आने वाले पसीने, पैरों में आने वाले पसीने तथा केवल ढके हुए शरीर के अंगों पर आने वाले पसीने के लिए आदर्श।

जैबोरैंडी 30 - चेहरे और सिर से शुरू होकर अत्यधिक पसीना आना, जिसके बाद हाथ-पैर ठंडे हो जाते हैं और खट्टे बलगम की उल्टी होती है।

कैलेडियम 30 - मीठी महक वाले पसीने के लिए, जो मक्खियों को आकर्षित करता है।

थूजा ओक्सीडेंटलिस 200 - शरीर के खुले भागों पर पसीना आने, तैलीय, मीठी और दुर्गंधयुक्त गंध के लिए सर्वोत्तम, विशेष रूप से जननांगों के आसपास और शरीर के केवल एक तरफ।

ये उपचार विभिन्न प्रकार के अत्यधिक और समस्याग्रस्त पसीने के लिए लक्षित समाधान प्रदान करते हैं।

अप्लास्टिक एनीमिया के उपचार के लिए होम्योपैथी

अप्लास्टिक एनीमिया एक दुर्लभ स्थिति है जो अस्थि मज्जा और उसके भीतर रहने वाले हेमटोपोइएटिक स्टेम कोशिकाओं को नुकसान पहुंचाती है। इसके परिणामस्वरूप तीनों प्रकार की रक्त कोशिकाओं की कमी हो जाती है- लाल रक्त कोशिकाएं, श्वेत रक्त कोशिकाएं, और प्लेटलेट्स। स्टेम कोशिकाओं द्वारा परिपक्व रक्त कोशिकाओं का उत्पादन करने में असमर्थता को अप्लास्टिक एनीमिया के रूप में जाना जाता है। होम्योपैथी उपचार और एक भारतीय अप्लास्टिक एनीमिया विशेषज्ञ द्वारा अप्लास्टिक एनीमिया उपचार अविश्वसनीय रूप से फायदेमंद साबित हुए हैं।

अप्लास्टिक एनीमिया तब होता है जब आपकी अस्थि मज्जा क्षतिग्रस्त हो जाती है, जिससे नई रक्त कोशिकाओं का निर्माण धीमा हो जाता है या बंद हो जाता है। आपकी हड्डियों के अंदर लाल, स्पंजी परत जिसे अस्थि मज्जा कहा जाता है, स्टेम सेल बनाती है, जो अन्य कोशिकाओं को जन्म देती है।

लाल रक्त कोशिकाएं, श्वेत रक्त कोशिकाएं और प्लेटलेट्स सभी अस्थि मज्जा में स्टेम कोशिकाओं द्वारा निर्मित होते हैं।

अप्लास्टिक एनीमिया में अस्थि मज्जा को अप्लास्टिक या हाइपोप्लास्टिक के रूप में परिभाषित किया जाता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि यह खाली है (अप्लास्टिक) या इसमें कम संख्या में रक्त कोशिकाएं हैं (हाइपोप्लास्टिक)।

ऐसे कारक जो अस्थि मज्जा को स्थायी या अस्थायी रूप से क्षतिग्रस्त कर सकते हैं और रक्त कोशिका उत्पादन को प्रभावित कर सकते हैं, उनमें शामिल हैं-

कीमोथेरेपी और विकिरण उपचार - विकिरण और कीमोथेरेपी उपचार दो ऐसे कारक हैं जो अस्थि मज्जा को नुकसान पहुंचा सकते हैं और रक्त कोशिका निर्माण को अस्थायी या स्थायी रूप से ख़राब कर सकते हैं।

जबकि ये कैंसर से लड़ने वाले उपचार कैंसर कोशिकाओं को लक्षित करते हैं, वे स्वस्थ कोशिकाओं को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं, जैसे अस्थि मज्जा स्टेम सेल। ये दवाएँ क्षणिक दुष्प्रभाव के रूप में अप्लास्टिक एनीमिया का कारण बन सकती हैं।

जहरीले रसायनों के संपर्क में आना - अप्लास्टिक एनीमिया कीटनाशकों और कीटनाशकों में पाए जाने वाले खतरनाक पदार्थों के कारण हो सकता है। अप्लास्टिक एनीमिया को गैसोलीन के एक घटक बेंजीन के संपर्क में आने से भी जोड़ा गया है। यदि आप उन पदार्थों के बार-बार संपर्क में आने से बचते हैं जो आपकी मूल बीमारी का कारण बने हैं, तो इस प्रकार का एनीमिया अपने आप ठीक हो सकता है।

कुछ दवाएं लेना - अप्लास्टिक एनीमिया कुछ दवाओं के कारण हो सकता है, जैसे रुमेटी गठिया और एंटीबायोटिक दवाओं के इलाज के लिए उपयोग की जाने वाली दवाएं।

स्वप्रतिरक्षी विकार - आपके अस्थि मज्जा में स्थित स्टेम कोशिकाएं स्वप्रतिरक्षी बीमारी में शामिल हो सकती हैं, जिसमें आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली स्वस्थ कोशिकाओं पर हमला करती है।

वायरस के कारण होने वाला संक्रमण - कुछ व्यक्तियों में, अस्थि मज्जा के वायरल संक्रमण अप्लास्टिक एनीमिया के विकास में भूमिका निभा सकते हैं। हेपेटाइटिस, एपस्टीन-बार वायरस, सीएमवी, पार्वोवायरस बी19 और एचआईवी उन वायरस में से हैं जो अप्लास्टिक एनीमिया के विकास से जुड़े हैं।

गर्भावस्था - गर्भावस्था के दौरान अप्लास्टिक एनीमिया एक स्वप्रतिरक्षी समस्या से जुड़ा हो सकता है, जिसमें आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली आपकी हड्डियों पर हमला करती है।

अप्लास्टिक एनीमिया के लक्षण

अप्लास्टिक एनीमिया के कुछ सामान्य लक्षण इस प्रकार हैं-

- परिश्रम के साथ सांस फूलना
- थकान
- तेज़ या अनियमित हृदय गति
- पीली त्वचा
- अस्पष्टीकृत या सहज चोट लगना
- बार-बार या लम्बे समय तक संक्रमण
- नाक से खून आना और मसूड़ों से खून आना
- कटने से लंबे समय तक खून बहना
- चक्कर आना
- सिरदर्द
- त्वचा के लाल चकत्ते

अप्लास्टिक एनीमिया धीरे-धीरे कुछ हफ्तों या महीनों में विकसित हो सकता है या अप्रत्याशित रूप से प्रकट हो सकता है। यह अल्पकालिक या दीर्घकालिक बीमारी हो सकती है। अप्लास्टिक एनीमिया एक प्रकार का एनीमिया है जो अत्यधिक गंभीर और यहां तक कि घातक भी हो सकता है।

दो साल के बच्चे से हारा अप्लास्टिक एनीमिया, होम्योपैथी साबित हुई वरदान

बिहार का रहने वाला दो साल का मासूम शिवांश सिंह अप्लास्टिक एनीमिया नामक गंभीर बीमारी से पीड़ित था. उसके इलाज के लिए परिजनों ने बिहार सहित दिल्ली के बड़े अस्पताल तक से इलाज करवाया, लेकिन बच्चे की हालत ठीक होने के बजाए और खराब होती चली गई. इंदौर के डॉक्टर एके द्विवेदी के होम्योपैथिक इलाज से बच्चे की हालत में बहुत सुधार आया है. बच्चे के पिता ने इस उपलब्धि के लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को पत्र लिखा है.

मेडिकल साइंस (Medical Science) में अत्याधुनिक नवीनतम पद्धतियां मौजूद होने के बावजूद अप्लास्टिक एनीमिया (Aplastic Anemia) का इलाज करना अब भी चुनौती बना हुआ है. लेकिन अब होम्योपैथिक दवाईयों से मरीजों को पूरी तरह ठीक करने में बड़ी सफलता मिल रही है. अप्लास्टिक एनीमिया के हर उम्र के मरीजों को स्वस्थ कर नया जीवन देने की दिशा में होम्योपैथिक दवाइयों से कम समय में बड़े सकारात्मक परिणाम मिल रहे हैं. हाल ही में इंदौर के डॉ. ए.के. द्विवेदी ने बिहार के दो वर्षीय बच्चे की इस बीमारी को दूर किया.

बीमारी से पीड़ित बच्चे के पिता ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को इस उपलब्धि के बारे में बताने के लिए एक पत्र लिखा है. मौलाबाग, भोजपुर निवासी नीरज कुमार ने बताया कि मेरे दो साल के बेटे शिवांश सिंह को अप्लास्टिक एनीमिया नामक बीमारी हो गई थी. स्थानीय स्तर पर हमने कई अस्पतालों और डॉक्टरों से इलाज करवाया उसकी बीमारी खत्म नहीं हुई. दिल्ली के अस्पताल में विशेषज्ञ डॉक्टर से भी पांच महीने तक इलाज करवाया, लेकिन बच्चे की हालत और खराब होती चली गई.

नीरज कुमार ने आगे कहा कि, मुझे इंदौर के एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर के बारे में जानकारी मिली. जिसके बाद यहां डॉ. एके द्विवेदी से संपर्क किया. डॉक्टर ने वीडियो कॉलिंग के माध्यम से इलाज शुरू किया और दवाइयां दीं. कई बार जांचें करवाई गईं और उनकी रिपोर्ट के आधार पर दवा की मात्रा कम-ज्यादा की गई. उन्होंने बताया अब मेरे बच्चे के स्वास्थ्य में काफी सुधार है और जल्द ही उसके पूरी तरह ठीक हो जाने की उम्मीद जताई.

न ब्लड देना पड़ रहा, न प्लेटलेट्स

डॉ. द्विवेदी ने बताया कि शिवांश की हालत में अब पहले से काफी सुधार है और दवाइयों के असर से उसकी बीमारी लगभग ठीक हो चुकी है. अब न ही उसे ब्लड चढ़ाना पड़ता है और न ही प्लेटलेट्स देने की जरूरत पड़ती है. अब शरीर के विभिन्न हिस्सों से ब्लीडिंग भी नहीं होती और कुछ ही दिनों में वह सामान्य बच्चों के साथ दौड़ने-भागने और खेलने में सक्षम होगा. संभव है कि भविष्य में उसे दवाइयां लेने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी.

भारत में अप्लास्टिक एनीमिया के उपचार में होम्योपैथी की भूमिका

भारत में अप्लास्टिक एनीमिया के उपचार में होम्योपैथी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। होम्योपैथी के माध्यम से भारत में अप्लास्टिक एनीमिया का उपचार संभव है।

डा. एके द्विवेदी ने बताया कि अप्लास्टिक एनीमिया कई कारणों से हो सकता है। बीमारी में शरीर में हीमोग्लोबिन और प्लेटलेट्स की संख्या कम होने लगती है। बोन मैरो डिसआर्डर से नाक, आंख, कान समेत शरीर के कई अंगों से रक्तस्राव होने लगता है। इसके लिए हर दूसरे दिन लाल रक्त कोशिकाएं (आरबीसी) और प्लेटलेट्स चढ़ाने की आवश्यकता पड़ती है। अप्लास्टिक एनीमिया के मामले पुरुषों से अधिक महिलाओं में देखे जाते हैं। मेनोपाज के बाद महिलाओं को यदि रक्तस्राव फिर होने लगे तो इसे हार्मोनल बदलाव न समझ कर जांच करवानी चाहिए।

इससे बचाव के लिए हर छह महीने से साल भर के बीच में एक बार कंपलीट ब्लड काउंट (सीबीसी) की जांच में हीमोग्लोबिन 13 और प्लेटलेट्स की संख्या डेढ़ लाख तक हो तो यह आपके स्वस्थ होने की निशानी है। डा. एके द्विवेदी ने बताया कि 23 वर्ष पहले अप्लास्टिक एनीमिया का पहला मरीज उनके पास इंदौर में आया था। मरीज के मुंह के तालू से रक्तस्राव हो रहा था। होम्योपैथिक में उस मरीज को शाम को दवा देने पर अगली सुबह रक्तस्राव बंद हो गया। लगातार कुछ महीने दवा लेने के बाद उनके प्लेटलेट्स और आरबीसी में बढ़ोतरी भी दर्ज हुई। डा. एके द्विवेदी के पास देश भर से रोजाना तीन से चार मरीज अप्लास्टिक एनीमिया का इलाज करवाने पहुंच रहे हैं।

डा. द्विवेदी के साथ उनके इलाज से ठीक हुए बिहार के चंपारण के सेवानिवृत्त शिक्षक मसीहा आजम भी पहुंचे। उन्होंने अप्लास्टिक एनीमिया के होम्योपैथिक इलाज पर अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने कहा कि 2018 में बीमारी से ग्रस्त होने पर छह माहल के इलाज के बाद आज वह पूरी तरह स्वस्थ हैं। रोजाना 50 से 100 किलोमीटर तक का सफर भी तय करते हैं

सिकल सेल एनीमिया और होम्योपैथी इलाज

हीमोग्लोबिनोपैथी लाल रक्त कोशिकाओं का एक अनुवांशिक रोग है जिसमें मुख्यतः सिकल सेल एनीमिया एवं थैलेसिमिया शामिल हैं। सिकल सेल एनीमिया ऐसा रक्त विकार है जिसमे लाल रक्त कोशिकाएं जल्दी टूट जाती हैं जिसके कारण एनीमिया तथा अन्य जटिलताएं जैसे कि वेसो-ओक्लुसिव क्राइसिस, फेफड़ों में संक्रमण, एनीमिया, गुर्दे और यकृत की विफलता, स्ट्रोक आदि के कारण रूग्णता और मृत्यु की सम्भावना होती है। सिकल सेल के रोगी दो प्रकार के होते है , सिकल सेल वाहक (लक्षण रहित/मंद लक्षण) एवं सिकल सेल रोगी (गंभीर लक्षण)। सिकल सेल वाहक में गंभीर लक्षण नहीं होते किन्तु यह एक असामान्य जीन को अगली पीढ़ी में संचारित करता है। सिकल सेल की पहचान विशेष रक्त जांच से की जा सकती है।

सिकल सेल एनीमिया क्या है?

प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति के रक्त में लाल रक्त कोशिकाएं होती हैं जो आकार में गोल, नर्म और लचीली होती हैं। यह लाल रक्त कोशिकाएं जब स्वयं के आकार से भी सूक्ष्म धमनियों में से प्रवाह करती हैं तब वह अंडाकार आकार की हो जाती है। सूक्ष्म धमनियों से बाहर निकलने के पश्चात कोशिकाओं के लचीलेपन के कारण वे पुनः अपना मूल स्वरूप ले लेती हैं। लाल रक्त कोशिकाओं का लाल रंग उसमे रहने वाले हीमोग्लोबिन नामक तत्व के कारण होता है। स्वस्थ रक्तकण में हीमोग्लोबिन नॉर्मल अर्थात सामान्य प्रकार का होता है। हीमोग्लोबिन का आकार सामान्य के बदले असामान्य भी देखने को मिलता है। जब लाल रक्त कोशिकाओं में इस प्रकार का बदलाव होता है तब लाल रक्त कोशिकाएं जो सामान्य रूप से आकार में गोल तथा लचीली होती हैं यह गुण परिवर्तित कर अर्ध गोलाकार एवं सख्त/कड़क हो जाता है जिसे सिकल सेल कहा जाता है (लेटिन भाषा में सिकल का अर्थ हंसिया होता है)। यह धमनियों में अवरोध उत्पन्न करती हैं जिससे शरीर में हीमोग्लोबिन व खून की कमी होने लगती है इसलिए इसे सिकल सेल एनीमिया कहा जाता है। लाल रक्त कोशिकाओं का यह विकार हमारे अंदर रहने वाले जीन की विकृति के कारण होता है। जब लाल रक्त कोशिकाओं में इस प्रकार का विकार पैदा होता है तब व्यक्ति के शरीर में अलग-अलग प्रकार की शारीरिक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं जैसे कि हाथ पैरों में दर्द होना, कमर के जोड़ों में दर्द होना, अस्थिरोग, बार- बार पीलिया होना, लीवर पर सूजन आना, मूत्राशय में रूकावट/दर्द होना, पित्ताशय में पथरी होना। जब किसी भी व्यक्ति को यह समस्याएँ होने लगें तो उसे रक्त की सिकल सेल एनीमिया के लिए जांच करवाना आवश्यक होता है।

यह रोग कैसे होता है और उसके प्रकार

यह रोग अनुवांशिक आधारित है। हर व्यक्ति को अपने माता-पिता के माध्यम से एक जीन मिलता है। अर्थात हर व्यक्ति में दो जीन होते हैं एक माता के द्वारा जबकि दूसरा पिता के द्वारा प्राप्त होता है। इस जीन में सामान्य प्रकार का Hb-A हीमोग्लोबिन हो सकता है अथवा एक में सामान्य और दूसरे में असामान्य Hb-S प्रकार का हीमोग्लोबिन हो सकता है, अथवा दोनों जीन मे असामान्य Hb-S प्रकार के हीमोग्लोबिन हो सकते हैं। असामान्य प्रकार के हीमोग्लोबिन वाली लाल रक्त कोशिका को सिकल सेल कहा जाता है। इस प्रकार के जीन पाने वाले व्यक्ति भविष्य में अपने बच्चों को वंशानुगत रूप से इसमें से किसी भी प्रकार के जीन दे सकते है जो सामान्य Hb-A या असामान्य Hb-S हो सकते हैं। सिकल सेल एनीमिया दो प्रकार का होता है पहले प्रकार को अंग्रेजी में सिकल वाहक कहा जाता है। जिसमे असामान्य हीमोग्लोबिन Hb-S का प्रमाण 50% से कम होता है तथा सामान्य Hb-A का प्रमाण 50% से ज्यादा होता है। जबकि दूसरे प्रकार को सिकल रोगी वाला व्यक्ति कहते है जिसमे असामान्य हीमोग्लोबिन Hb-S का प्रमाण 50% से अधिक लगभग 80% होता है तथा सामान्य हीमोग्लोबिन उपस्थित ही नहीं होता है।

प्रथम प्रकार अर्थात सिकल सेल वाहकः व्यक्ति रोग के वाहक के रूप में काम करते हैं अर्थात उनमे सिकल सेल के रोग के लक्षण स्थायी न होकर कभी - कभी दिखाई देते है। फिर भी ये व्यक्ति अपने बच्चों को वंशानुगत यह रोग दे सकते हैं।

दूसरे प्रकार के सिकल रोगीः यह वह व्यक्ति होते है जिनमें रोग के लक्षण स्थायी रूप से रहते हैं जिससे उनके शरीर का विकास रुक जाता है। ये लोग निश्चित ही अपने बच्चों को वंशानुगत यह रोग देते हैं।

सिकल सेल रोग वाले मरीज़ के लक्षण क्या हैं ?

जोड़ों में सूजन या दर्द होना, पित्ताशय की पथरी, बार- बार बुखार या जुकाम होना , तिल्ली का बढ़ जाना, लीवर पर सूजन आना, बच्चों का विकास न होना, रोग प्रतिरोधक शक्ति घटने से दूसरी बीमारियों का आसानी से होना आदि, इस बीमारी के लक्षण है। यदि रोग का निदान न किया जाये तो जरुरी उपचार न मिलने से बचपन में ही बच्चे की मृत्यु हो सकती है।

यह सब जानने के पश्चात कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है जैसे कि-

- विवाह से पहले लड़के और लड़की के खून की सिकल सेल के लिए जांच कराएं।
- यदि परिवार में किसी भी सदस्य को सिकल सेल एनीमिया हो तो परिवार के सभी सदस्यों के रक्त की सिकल सेल की जांच कराएं।
- यदि आप स्वयं सिकल सेल रोगी हैं (रक्त की जांच करने के बाद पता चला हो) तो डॉक्टर के पास जब दवा लेने जाएं तब डॉक्टर को अपनी बीमारी की सही जानकारी से अवगत कराएं जिससे आपको जरूरी दवाएँ मिल सकें और उपचार हो सके।
- याद रखें सिकल वाहक रोगी नहीं है, परन्तु सिकल वाहक (केरियर) हैं जबकि सिकल रोग एक रोग है। यह दोनों परिस्थितियां माता-पिता की तरफ से बच्चों को अनुवांशिक मिलती हैं।

कुछ आवश्यक बातों का ध्यान रखकर बढ़ाया जा सकता है रक्त

एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेन्टर पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य रूप से झारखण्ड से श्री रामकुमार कुशवाहा एवं इंदौर से श्रीमती हेमलता लोखंडे ने अपने विचार व्यक्त किये कार्यशाला की अध्यक्षता आयुष मंत्रालय के सदस्य डॉ. ए.के. द्विवेदी ने किया। कार्यशाला में श्री रामकुमार कुशवाहा जी ने बताया कि, रक्त (ब्लड) की कई ऐसी बीमारियाँ हैं जिनमे बार-बार रक्त ब्लड चढ़ाना पड़ता है। खुद के बारे में बताते हुए बोले कि उनका ब्लड ग्रुप ''ओ नेगेटिव'' था 5 साल से अप्लास्टिक एनीमिया नामक बीमारी से पीड़ित थे ब्लड की कमी से कई अन्य परेशानियाँ हो जाती थी। ब्लड लगाने के लिए नेगेटिव ब्लड मिलता नहीं था होम्योपैथिक इलाज लेने के बाद अब पूरी तरह स्वस्थ है दवा भी बंद हो गई शादी भी कर लिये, एक बच्चा भी हो गया वह भी पूरी तरह स्वस्थ है। उन्होंने कहा कि जो भी लोग ब्लड कैंसर या रक्त की कमी में ब्लड बार-बार लगाकर परेशान हैं उनको होम्योपैथिक इलाज करना चाहिये, इसके परिणाम काफी बेहतर पाये गये हैं।

श्रीमती हेमलता लोखंडे जी ने कहा कि मानसिक विकार, घर के लड़ाई झगड़े हमारे शरीर को कमजोर बना देते हैं। रक्त की कमी से वजन कम हो जाता है साँस भरने लगती है, वजन कम हो सकता है साथ ही यदि ध्यान नहीं रखा तो किडनी की बीमारी हो सकती है। हीमोग्लोबिन कम हो जाता है और क्रिएटनिन बढ़ने लगता है। होम्योपैथिक इलाज के साथ-साथ सही खान-पान से ठीक किया जा सकता है।

डॉ. द्विवेदी ने कहा कि सिकल सेल एनीमिया, थैलेसीमिया, अप्लास्टिक एनीमिया ब्लड कैंसर एवं कीमोथेरपी के मरीजों को बार-बार ब्लड चढ़ाना पड़ता है जो कि अपने आप में एक जटिल समस्या है बार-बार ब्लड लगाने से शरीर में आयरन डिपोजिट होने लगता है, होम्योपैथिक इलाज से हीमोग्लोबिन तथा प्लेटलेट्स बढ़ाया जा सकता है जिससे बार-बार ब्लड लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

हीमोग्लोबिन फेफड़ों से ऑक्सीजन लेकर रक्त में ऑक्सीजन पहुँचाता है। इसलिए आयरन की कमी से शरीर में हीमोग्लोबिन की कमी हो जाती है और हीमोग्लोबिन कम होने से शरीर में ऑक्सीजन की कमी होने लगती है। इसकी वजह से कमजोरी और थकान महसूस होती है, ऐसी स्थिति को एनीमिया कहते हैं।

डॉ. द्विवेदी ने बताया कि, रूखी-सूखी और खुजलीदार त्वचा इस बात का संकेत देती है कि पर्याप्त मात्रा में पोषण नहीं मिल रहा है। जिसका सबसे बड़ा लक्षण थकान, अत्यधिक कमजोरी, नींद की कमी, एकाग्रता में कमी, हृदय गति का तेज होना, सीने में दर्द तथा सिरदर्द, सीढ़ी चढ़ने या टहलने में भी सांस फूलना आदि।

साथ यदि कोई बड़ी बीमारी न हो तो एनीमिया को खान-पान से भी दूर किया जा सकता है। हरी पत्तेदार सब्जियाँ, चुकंदर, सोयाबीन, टमाटर, अनार, सेब एवं अंडे के अलावा होलग्रेन जैसे जई, चना, मेवा, शहद, किशमिश व खजूर आदि डाइट में शामिल कर खून की कमी को दूर किया जा सकता है।

होम्योपैथी के उपयोग के लाभ

होम्योपैथी SCD के इलाज के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जो शरीर के प्राकृतिक उपचार तंत्र को उत्तेजित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। होम्योपैथिक उपचार प्राकृतिक पदार्थों से प्राप्त होते हैं और लंबे समय तक उपयोग के लिए सुरक्षित होते हैं। यहाँ SCD के प्रबंधन के लिए आमतौर पर इस्तेमाल की जाने वाली पाँच होम्योपैथिक दवाएँ दी गई हैं-

आर्सेनिकम एल्बम– यह दवा सिकल सेल संकट के दौरान तीव्र दर्द, बेचैनी और चिंता का अनुभव करने वाले व्यक्तियों के लिए फायदेमंद है।

फेरम फॉस्फोरिकम– एनीमिया के उपचार और ऊतकों में बेहतर ऑक्सीजनीकरण को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी।

नैट्रम म्यूरिएटिकम– शरीर में तरल पदार्थ और इलेक्ट्रोलाइट्स के संतुलन को विनियमित करने में मदद करता है, जिससे निर्जलीकरण का खतरा कम हो जाता है।

अर्निका मोंटाना– सिकल सेल संकट से जुड़ी मांसपेशियों की पीड़ा और चोट से राहत देता है।

कैल्केरिया फॉस्फोरिका– हड्डियों के स्वास्थ्य का समर्थन करता है और क्षतिग्रस्त ऊतकों के पुनर्जनन में मदद करता है।

घुटने के दर्द का होम्योपैथिक उपचार: प्रभावी समाधान

घुटने में दर्द की शिकायत घुटने में चोट लगने या दूसरी बीमारियों के कारण पैदा होती है। घुटने में दर्द दैनिक जीवन में मुश्किलें बढ़ा सकता है। घुटने में दर्द के अनेक कारण और लक्षण हो सकते हैं। इसके कारण और लक्षणों के आधार पर डॉक्टर उपचार का विकल्प चुनते हैं।

घुटना शरीर के अहम् जोड़ों में से एक है जो उठने, बैठने, चलने या दैनिक जीवन के दूसरे अनेक कामों को बिना किसी परेशानी का सामना किए आसानी से पूरा करने में मदद करता है। जीवन की गुणवत्ता यानी क्वालिटी में स्वस्थ घुटने की खास भूमिका होती है।

अक्सर दौड़ते, खेलते, यात्रा करते, सीढ़ियां चढ़ते या दैनिक जीवन के कामों को करते समय घुटने में चोट लग जाती है जिसके कारण घुटने में दर्द होता है। चोट के कारण घुटने में दर्द होना कोई गंभीर समस्या नहीं है, क्योंकि इसका उपचर घरेलू नुस्खों, ओवर-द-काउंटर-दवाओं से किया जा सकता है। परेशानी तब बढ़ जाती है जब घुटने में दर्द का कारण बर्साइटिस, गाउट, टेंडनाइटीस या आर्थराइटिस जैसी कोई गंभीर बीमारी होती है।

ऐसी स्थिति में घरेलू उपायों से कोई फायदा नहीं होता है। इस स्थिति में घुटने दर्द का इलाज करने के लिए डॉक्टर दवाओं, तेल या सर्जरी का उपयोग करते हैं।

घुटनों में दर्द होने के कारण

घुटने में दर्द का कारण अनेको सामान्य और गंभीर स्थितियां और बीमारियां हो सकती हैं। घुटने में दर्द के निम्न कारण हो सकते हैं-

- आर्थराइटिस
- बर्साइटिस
- डिस्लोकेशन
- बेकर्स सिस्ट
- मेनिस्कस टियर
- गाउट
- टेंडनाइटिस
- ऑस्टियोआर्थराइटिस
- हड्डियों का कैंसर
- लिगामेंट टूटना
- हड्डियां कमजोर होना
- पैर मोड़कर लंबे समय तक बैठना
- मोटापा के कारण घुटने पर प्रेशर पड़ना

डॉ. ए.के. द्विवेदी के अनुसार होम्योपैथिक दवाओं के माध्यम से घुटने के दर्द का सफलतापूर्वक इलाज किया जा सकता है। ये दवाएं प्राकृतिक होती हैं, जिससे वे सभी आयु समूहों के लिए सुरक्षित होती हैं और किसी विषाक्त प्रभाव का खतरा नहीं रहता। होम्योपैथी न केवल तीव्र (एक्यूट) बल्कि पुराने (क्रोनिक) घुटने के दर्द में भी राहत प्रदान करती है। ये दवाएं दर्द, सूजन, कोमलता और कठोरता जैसी समस्याओं में प्रभावी होती हैं।

घुटने के दर्द के लिए प्रमुख होम्योपैथिक दवाएं

कैल्केरिया कार्ब – ऑस्टियोआर्थराइटिस (गठिया) से होने वाले घुटने के दर्द में उपयोगी।
रस टॉक्स – संधिशोथ (रूमेटाइड आर्थराइटिस) से होने वाले दर्द में प्रभावी।
कोलचिकम – गाउट (यूरिक एसिड बढ़ने के कारण होने वाली सूजन) से उत्पन्न दर्द के लिए उपयुक्त।
रूटा – लिगामेंट की चोट से उत्पन्न घुटने के दर्द के लिए लाभकारी।
सिम्फाइटम – हड्डियों की चोट या फ्रैक्चर के कारण होने वाले दर्द के लिए उत्तम।

ऑस्टियोआर्थराइटिस (गठिया) से घुटने का दर्द

ऑस्टियोआर्थराइटिस एक अपक्षयी (डीजेनेरेटिव) रोग है, जिसमें घुटने के कार्टिलेज (उपास्थि) में गिरावट आ जाती है, जिससे जोड़ के बीच की जगह कम हो जाती है। इसके सामान्य लक्षणों में घुटनों में दर्द, कठोरता और चलते समय क्रैकिंग (ध्वनि आना) शामिल हैं।

प्रभावी होम्योपैथिक दवाएं-
कैल्केरिया कार्ब – जब बैठने से उठने पर या चलने के दौरान घुटने में दर्द हो। यह विशेष रूप से अधिक वजन वाले व्यक्तियों के लिए लाभदायक होती है।
रूटा – जब सीढ़ियां चढ़ने-उतरने से दर्द बढ़ता हो और घुटने पर दबाव डालने से राहत मिले।
कास्टिकम – जब घुटनों में कठोरता के साथ आवाज (क्रैकिंग) आती हो और जोड़ में अत्यधिक जकड़न हो।

संधिशोथ (रूमेटाइड आर्थराइटिस) से घुटने का दर्द

संधिशोथ एक स्व-प्रतिरक्षित (ऑटोइम्यून) रोग है, जो शरीर के किसी भी जोड़ को प्रभावित कर सकता है। इसमें जोड़ों में सूजन, कठोरता और दर्द मुख्य लक्षण होते हैं।

प्रभावी होम्योपैथिक दवाएं-
ब्रायोनिया – जब हल्की-सी भी हलचल से घुटने में दर्द बढ़ जाता हो और आराम करने से राहत मिले। ऐसे मामलों में सूजन भी देखी जा सकती है।
रस टॉक्स – जब घुटनों की कठोरता और दर्द चलने से धीरे-धीरे कम हो जाता हो।
सैलिसिलिक एसिड – जब घुटने अत्यधिक सूजे हुए, अत्यधिक दर्दनाक हों और तेज बुखार के साथ हों। यह तीव्र संधिशोथ के लिए अत्यधिक प्रभावी दवा है।

गठिया रोग से राहत के लिए होम्योपैथिक उपचार भी कारगर

डॉ एके द्विवेदी ने बताया कि घुटने के दर्द का इलाज होम्योपैथिक दवाओं के साथ शानदार ढंग से किया जा सकता हैं। ये प्राकृतिक हैं और इसलिए उपयोग के लिए सुरक्षित हैं। ये दवाएं तीव्र और पुराने दोनों तरह के दर्द में सहायक होती हैं।

घुटने का दर्द कई कारणों से उत्पन्न हो सकता है, जिसमें घुटने के जोड़ का कमजोर होना, सूजन या चोट शामिल है। घुटने के दर्द का कारण बनने वाली प्रमुख चिकित्सा स्थितियां हैं ऑस्टियोआर्थराइटिस, रुमेटाइड आर्थराइटिस या गठिया, घुटने की चोट और बर्साइटिस। घुटने का दर्द किसी भी उम्र के व्यक्तियों में उत्पन्न हो सकता है। आमतौर पर घुटने के दर्द के साथ होने वाले लक्षण घुटने के जोड़ में सूजन, कठोरता, कोमलता और गर्मी हैं। होम्योपैथिक दवाएं अपक्षयी, पीड़ादायक और साथ ही सूजन मूल के घुटने के दर्द को प्रबंधित करने में बहुत प्रभावी हैं। इसके लक्षण और उपाय बता रहे हैं केंद्रीय होम्योपैथिक अनुसन्धान परिषद, आयुष मंत्रालय भारत सरकार के सदस्य डॉ ए.के. द्विवेदी।

घुटने के दर्द के लिए होम्योपैथिक दवाएं

डॉ एके द्विवेदी ने बताया कि घुटने के दर्द का इलाज होम्योपैथिक दवाओं के साथ शानदार ढंग से किया जा सकता है, जो प्राकृतिक हैं और इसलिए उपयोग के लिए सुरक्षित हैं। प्राकृतिक दवाएं तीव्र और पुराने दोनों तरह के दर्द में सहायक होती हैं। वे विषाक्तता के किसी भी जोखिम के बिना सभी आयु समूहों के बीच उपयोग के लिए सुरक्षित हैं। वे घुटने में दर्द और सूजन, कोमलता और कठोरता जैसे लक्षणों के साथ राहत देने में मदद करती हैं। घुटने के दर्द के लिए अनुशंसित दवाओं में कैल्केरिया कार्ब, रस टॉक्स, कोलचिकम, रूटा और सिम्फाइटम हैं। इन दवाओं में ऑस्टियोआर्थराइटिस से घुटने के दर्द के लिए कैल्केरिया कार्ब की सिफारिश की जाती है और संधिशोथ से घुटने के दर्द के लिए रस टॉक्स का संकेत दिया जाता है। कोलचिकम ने गाउट के परिणामस्वरूप घुटने के दर्द में उल्लेखनीय परिणाम दिखाया है, जबकि रुटा और सिमफाइटम क्रमशः लिगामेंट और हड्डियों की चोट से घुटने के दर्द के लिए उत्कृष्ट दवाएं हैं।

आस्टियोआर्थराइटिस के कारण घुटने में दर्द के लिए

आस्टियोआर्थराइटिस एक अपक्षयी बीमारी है। घुटने के पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस में, घुटने के उपास्थि में विकृति आ जाती है जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त स्थान कम हो जाता है। घुटने के पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस के लक्षण घुटने के जोड़ में दर्द, कठोरता और क्रैकिंग (ध्वनि) हैं। घुटने के पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस के पीछे मुख्य कारण उम्र, अतिरिक्त वजन, चोट और संयुक्त का अति प्रयोग है। पुरान ऑस्टियोआर्थराइटिस से घुटने के दर्द के लि प्रभावी दवाएं कैलकेरिया कार्ब, रूटा और कास्टिकम हैं। एक जगह से उठने और चलने पर घुटने में दर्द होने पर कैल्केरिया कार्ब सबसे उपयुक्त है। जिन व्यक्तियों को कल्केरिया का निर्धारित करने की आवश्यकता होती है, आमतौर पर अधिक वजन वाले होते हैं। घुटने के दर्द के लिए रूटा सबसे सहायक दवाओं में से एक है जब दर्द सीढ़ियों से ऊपर और नीचे चढ़ने पर बिगड़ जाता है। घुटने पर दबाव क्षणिक राहत प्रदान कर सकता है। कास्टिकम को इंगित किया जाता है जब घुटने में दर्द घुटने के जोड़ में चिह्नित कठोरता और फ्रैंकिंग (ध्वनि) के साथ होता है।

संधिशोथ संबंधी दर्द के लिए

संधिशोथ जोड़ों की एक स्व-प्रतिरक्षी सूजन की बीमारी है। यह शरीर के किसी भी जोड़ को प्रभावित कर सकता है। मुख्य लक्षण कठोरता, दर्द और जोड़ों की सूजन हैं। संधिशोथ से घुटने के दर्द के लिए उपयोगी दवाएं ब्रायोनिया, रस टॉक्स और सैलिसिलिक एसिड हैं। ब्रायोनिया तब निर्धारित किया जाता है, जब घुटने के जोड़ों का दर्द थोड़ी सी हलचल के साथ खराब हो जाता है। ऐसे ज्यादातर मामलों में घुटने में सूजन हो जाएगी। आराम से दर्द और सूजन ठीक हो जाती है। रस टॉक्स कठोरता के साथ घुटने के दर्द के लिए सबसे अच्छी दवाओं में से एक है। चलने के साथ घुटनों का दर्द और जकड़न ठीक हो जाती है। दूसरी ओर, सैलिसिलिक एसिड, घुटने के दर्द के लिए तीव्र माना जाता है। जहां घुटने अत्यधिक सूजन, दर्दनाक और तेज बुखार के साथ हो सकते हैं, आर्थराइटिस घुटने के दर्द के लिए दवाओं में सैलिसिलिक एसिड सबसे विश्वसनीय है।

चोट से घुटने के दर्द के लिए

खिलाड़ियों के बीच घुटने की चोट सबसे आम है। चोट में मुख्य रूप से कण्डरा, अस्थिबंध और हड्डी की चोट शामिल है। चोट के कारण घुटने के दर्द के लिए शीर्ष ग्रेड दवाएं रस टॉक्स, रुटा, और सिम्फाइटम हैं। लिगामेंट या टेंडन की चोट से घुटनों के दर्द के लिए रस टॉक्स और रुटा बहुत उपयोगी दवाएं हैं। ये दवाएं दर्द को कम करने और घायल स्नायुबंधन और टेनडान्स की प्राकृतिक चिकित्सा को बढ़ावा देने में मदद करती हैं। फ्रेक्चर घुटने के जोड़ से घुटने के दर्द के लिए सिम्फाइटम का इस्तेमाल प्रमुखता से किया जाता है। सिम्फाइटम, जिसे आमतौर पर निट बोन के रूप में जाना जाता है, फ्रेक्चर हड़ियों के मिलन को बढ़ावा देने में मदद करता है और फ्रेक्चर से उत्पन्न होने वाले घुटने के दर्द को कम करता है, जिससे यह घुटने के दर्द के लिए सबसे विश्वसनीय दवाओं में से एक है।

4 दिन की होम्योपैथी चिकित्सा से 3 पथरियों का उपचार

पथरी (कॅल्क्युली) के कारण हर साल लाखों लोग दर्द से छटपटाते हैं। यह एक ऐसा कठोर पदार्थ है, जो हमारे मूत्र मार्ग और पाचन तंत्र को अतिरिक्त कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे पीठ और पेट में तेज दर्द होता है। लेकिन आपको डरने की आवश्यकता नहीं हैं। चिकित्सा की दृष्टि से पथरी एक कठोर, पत्थर जैसी संरचना है, जो शरीर के विभिन्न भागों में विकसित हो सकती है, जिसमें यूरिनरी ट्रैक्ट, सलाइवरी ग्लैंड, पैंक्रियास, पित्ताशय की थैली, किडनी और टॉन्सिल शामिल है। पथरी के स्थान और आकार के आधार पर, मानव शरीर पर पथरी का प्रभाव हल्की असुविधा से लेकर गंभीर दर्द और समस्याओं तक विस्तारित हो सकता है। स्थिति की गंभीरता के आधार पर, पथरी के उपचार के विकल्पों में दवा, आहार परिवर्तन, या सर्जिकल प्रक्रियाएं शामिल है। निवारक उपाय, जैसे हाइड्रेटेड रहना, और कुछ खाद्य पदार्थों से परहेज करना, पथरी के विकास के जोखिम को कम करने में भी मदद कर सकता है।

पथरी कहां-कहां बनती है?

किडनी स्टोन: किडनी या गुर्दे की पथरी सबसे सामान्य प्रकार की पथरी होती है। यह पथरी कैल्शियम से बनती है। समय पर इलाज आपके लिए लाभकारी साबित हो सकता है।

गले की टॉन्सिल की पथरी: गले में भी पथरी का निर्माण हो सकता है। गले की टॉन्सिल के पीछे खाना जमा हो जाता है और गले में खराश, बदबूदार सांस और सूजन जैसी समस्या उत्पन्न करता है।

मूत्राशय की पथरी: पेशाब न रोक पाना या यूरिन में मिनरल्स का असंतुलन मूत्राशय की पथरी का मुख्य कारण होता है। कई बार गुर्दे की पथरी मूत्राशय में आ जाती है और व्यक्ति को परेशान करने लगती है।

पित्ताशय की पथरी: पित्त की थैली में बनने वाले पथरी को पित्ताशय की पथरी कहा जाता है। इस पथरी का निर्माण कोलेस्ट्रॉल और बिलीरुबिन से मिलकर होता है।

अग्न्याशय की पथरी: पेट में पैंक्रियास या फिर अग्न्याशय नाम का एक अंग है, जिसमें एक हार्मोन का निर्माण होता है, जो खाना पचाने में मदद करता है।

किसी व्यक्ति को यदि पथरी हो जाए तो वो काफी परेशान हो जाता है, उसे असहनीय दर्द भी होता है, इसी तरह की कुछ परेशानी से मैं (अनंतराम वर्मा उम्र 73 साल) भी गुजर रहा था। कुछ माह पहले 27 मार्च 2024 को कराई जांच की रिपोर्ट में मुझे पथरी की समस्या सामने आई। इसके बाद इलाज करने वाले दोनों डॉक्टर्स ने पथरी की परेशानी को हल करने के लिए ऑपरेशन कराने का बोल दिया। मैंने भी मन बना लिया था कि ऑपरेशन करवा लूंगा।

इसी बीच मेरी बिटिया जो कि होम्योपैथी चिकित्सा की पढ़ाई कर रही है उसने डॉक्टर एके द्विवेदी जी के बारे में बताया। जो कि डॉ. एके द्विवेदी जी की स्टूडेंट रही है। बिटिया ने कहा कि डॉ. एके द्विवेदी जी के पास दिखाते हैं क्योंकि वहां से हमें सही इलाज मिल जाएगा। इसके बाद मैं डॉ. एके द्विवेदी का पता लेकर उनके पास पहुंचा। मैंने डॉ. द्विवेदी जी को बताया कि 27 मार्च 2024 को हुई सोनोग्राफी रिपोर्ट में 16-17 एमएम साइज की पथरी का उल्लेख आया था। साथ ही दो-तीन अलग-अलग साइज की पथरी भी बताई गई थी। इसके बाद 2 अप्रैल 2024 को सीटी स्कैन कराया था जिसमें भी अलग-अलग साइज की पथरी का उल्लेख आया था।

मेरी बात सुनने के बाद डॉ. द्विवेदी ने मेरी पथरी की समस्या को देखते हुए 19 अप्रैल 2024 को होम्योपैथी उपचार से लाइन ऑफ ट्रीटमेंट शुरू किया वो देखकर मुझे काफी अच्छा लगा। मेरे मन में ठीक होने की जो धारणा लेकर आया था वो यहां आकर सही साबित हुई। डॉ. द्विवेदी जी द्वारा होम्योपैथी दवा देने के मात्र 4 दिन में ही परिणाम देखने को मिला। उपचार को चार दिन हुए थे, चौथे दिन 3 बजे पहली पथरी, 4 बजे दूसरी पथरी और फिर तीसरी पथरी भी निकल गई। इस दौरान काफी असहनीय दर्द भी हुआ था। कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या ही करूं। 25 अप्रैल 2024 को दोबारा सोनोग्राफी जांच करवाई। सोनोग्राफी करने वाले डॉक्टर्स काफी अच्छे थे। उन्होंने मुझे काफी समय दिया। 3 से 4 बार सोनोग्राफी करने के बाद पूरी तरह संतुष्ट हुए और बोले कि हम गारंटी से बोल रहे हैं कि कहीं भी कोई अंश पथरी का नहीं है।

होम्योपैथी से उपचार धीमा होता है यह धारणा गलत है

अनंतराम जी ने कहा कि लोगों की यह धारणा भी गलत है कि होम्योपैथी से उपचार धीमा होता है। क्योंकि मैंने स्वयं होम्योपैथी से उपचार लेकर अपनी 3 पथरी की परेशानी को मात्र 4 दिन में समाप्त होते हुए देखा है इसलिए लोगों की यह धारणा को मैं बिल्कुल गलत कहूंगा कि, होम्योपैथी चिकित्सा धीमा इलाज करती है। मेरी पथरी की परेशानी का निराकरण बिना ऑपरेशन और जल्दी करने के लिए मैं डॉ. एके द्विवेदी को धन्यवाद देता हूं और यही आशा भी करता हूं कि वे इस तरह से होम्योपैथी चिकित्सा के माध्यम से लोगों का सफल इलाज करते रहें।

होम्योपैथिक दवाइयों के उपचार से काफी अच्छा परिणाम

होम्योपैथी चिकित्सा से अनंतराम जी की पथरी का उपचार करने वाले डॉ. एके द्विवेदी ने केस रिपोर्ट के बारे में बताया कि 27 मार्च 2024 को हुई सोनोग्राफी रिपोर्ट में अनंतराम जी को 16-17 एमएम साइज की पथरी का उल्लेख आया था। साथ ही दो-तीन अलग-अलग साइज की पथरी भी बताई गई थी। इसके बाद 2 अप्रैल 2024 को सीटी स्कैन कराया था जिसमें भी अलग-अलग साइज की पथरी का उल्लेख आया था। वर्मा जी मेरे पास आने से पहले भी होम्योपैथी उपचार ले रहे थे। लेकिन दवा की मात्रा इतनी कम थी कि सही परिणाम नहीं आ रहा था। मेरे पास उपचार के लिए आए थे तब मैंने सही मात्रा में दवा दी और रिपिटेशन ऑफ डोज को ध्यान में रखते हुए उपचार किया।

सौंदर्य के लिए होम्योपैथी

स्वस्थ और चमकती हुई त्वचा अक्सर पूरे शरीर के स्वास्थ्य का दर्पण होती है। त्वचा की समस्याएं अक्सर आंतरिक स्वास्थ्य समस्याओं के कारण होती हैं जो किसी व्यक्ति के समग्र स्वास्थ्य को प्रतिबिंबित करती हैं। त्वचा की समस्याएं आमतौर पर एलर्जी के कारण या हार्मोन में असंतुलन हो जाने से या कुपोषण अथवा निर्जलीकरण के कारण होते हैं।

अन्य चिकित्सा पद्धतियों में, त्वचा की समस्याओं के इलाज के लिए, ज्यादातर सामयिक क्रीम का इस्तेमाल किया जाता है। होम्योपैथी सामयिक क्रीम के इलाज को गलत नहीं समझता लेकिन क्रीम से त्वचा पर तत्काल असर हो सकता है, हमेशा के लिए समाधान नहीं हो सकता जबकि होम्योपैथी रोग के जड़ को हीं ख़त्म कर देता है जिससे उस रोग के दुबारा पनपने की संभावना बहुत कम रहती है। प्रतिदिन दवाखाने पर ऐसे कई त्वचा रोग के मरीज आते हैं जो बताते हैं कि एलोपैथी चिकित्सा से उनका रोग दब जाता है और जैसे ही क्रीम (दवा) का प्रयोग बंद करते हैं वापस वही त्वचा रोग उभर जाता है। होम्योपैथी चिकित्सा में लक्षण को समझकर पूरे शरीर का इलाज किया जाता है जिससे की शरीर का पूरा तंत्र संतुलित रूप में काम करने लगे। होम्योपैथी मुँहासे, एक्जिमा, घावों, हाइव्स, सोरियासिस , चकत्ते, दाद इत्यादि जैसे त्वचा की बीमारियों को ठीक करने में बहुत हीं प्रभावकारी माना जाता है। होम्योपैथिक उपचार से आप स्वस्थ और तेजपूर्ण त्वचा पा सकते हैं।

मुँहासे के लिए उपचार

एंटीमोनिअम टरटारिकम, बेलाडोना, केलकेरिया कार्बोनिका, हीपर सल्फ, पल्सेटिला, सीलीसिया, सल्फर इत्यादि कुछ ऐसे होम्योपैथिक उपचार हैं जो मुँहासे के इलाज में बहुत हीं उपयोगी होते हैं। इनमें से प्रत्येक मुँहासे के उपचार के लिए विभिन्न कारणों से उपयोगी माने जाते हैं। इसलिए आपके मुँहासे के लिए सबसे अच्छा विकल्प कौन होगा इसके लिए बेहतर है कि आप एक होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श करें।

सावधानी

होम्योपैथिक के द्वारा स्व उपचार करना प्रभावी हो सकता है लेकिन त्वचा की समस्या या अन्य कोई समस्या लम्बे समय तक चलती जा रही हो या बार बार उत्पन्न हो जाती हो तो किसी कुशल होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श लें ताकि वे अच्छी तरह से आपकी समस्या को समझकर ऐसी औषधि दें जिससे आपकी समस्या दूर होने के साथ साथ आपका पूरा सिस्टम भी संतुलित हो जाये।

एक्जिमा के लिए उपचार

जीर्ण एवं एलर्जी के प्रति सवेदनशील त्वचा के उपचार के लिए कई होम्योपैथिक औषधियां प्रभावी एवं कारगर होती है। आरम-ट्राईफाइलम, आरसेनिक्म-एल्बम, ग्रेफाईट्स, मेजेरिअम, पेट्रोलियम, और रस-टाक्स इत्यादि एक्जिमा में आमतौर पर उपचार के रूप में इस्तेमाल किये जाते हैं। इनमें से प्रत्येक औषधि एक्जिमा के विभिन्न लक्षणों में उपचार के रूप में कारगर सिद्ध होते हैं। अन्य होम्योपैथिक औषधियां जो एक्जिमा के उपचार के लिए प्रभावी हो सकती हैं वे एंटीमोनिअम-क्रूडम, केलकेरिया-कार्बोनिका, हीपर सल्फ और सल्फर इत्यादि हैं।

तैलीय त्वचा के लिए उपचार

मरक्युरिअस, नेट्रम-म्यूर वैसे व्यक्तियों के लिए उपयोगी होते हैं जिनकी त्वचा तैलीय होती है। ऐनाकार्डियम एंटीमोनिअम-क्रूड, आर्निका, आरसेनिकम-एल्बम, बेलाडोना, कॉस्टिकम, डलकामारा, हैमामेलिज, फाईटोलिका, पल्सेटिला, रस-टाक्स इत्यादि कुछ ऐसी औषधियां हैं जिनका आमतौर पर त्वचा विकारों के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

दोनों बेटियों को मिला नया जीवन - अमरदास सिंह राजपूत

मेरी दो बेटियां है। कुछ साल पहले जब दोनों को कुछ समस्या होने लगी तो समझ नहीं आया कि क्या करूं? कहां जाऊ कि दोनों को जल्द से जल्द आराम हो जाए और फिर मुझे होम्यो गुरु डॉक्टर ए. के द्विवेदी सर का पता चला और मैं सीधा उनके पास पहुंच गया। ये बात सालों पुरानी है लेकिन आज भी कोई भी हेल्थ इशू होने पर मैं उन्हीं की सलाह लेता हूं।

ये बात बिजनेसमैन अमरदास सिंह राजपूत ने एक साक्षात्कार के दौरान साझा की है। उन्होंने बताया कि मेरी बड़ी बेटी थोड़ी बड़ी होने तक बिस्तर में बाथरूम कर दिया करती थी और छोटी बेटी को सफेद दाग थे। दोनों बेटियों का इलाज डॉक्टर ए.के. द्विवेदी सर ने ही किया है और करीब छह से एक साल में ही दोनों को आराम हो गया। छोटी बेटी पर्ल की उम्र उस वक्त करीब 11,12 साल की थी और अब वो मुम्बई में पढ़ाई कर रही है। बड़ी बेटी वंशिका जब बिस्तर में बाथरूम कर दिया करती थी उस वक्त उसके उम्र लगभग 5,6 साल की थी और अब वो इंजीनियर है। अब दोनों ही बेटियां पूरी तरह स्वस्थ है। डॉक्टर ए.के. द्विवेदी सर के इलाज पर आज मुझे इतना भरोसा हो गया है कि अब परिवार में बल्कि खासतौर पर बेटियों को किसी भी तरह के इलाज की जरूरत होती है तो मैं द्विवेदी सर के पास ही जाता हूं। होम्योपैथी का इलाज राम बान है इसके कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है और बल्कि आराम भी पड़ जाता है।

एसिडिटी से मिली राहत

अमरदास सिंह राजपूत ने बताया कि वे भी एसिडिटी से काफी परेशान थे, उन्होंने बताया कि एसिडिटी के कारण मैं इतना परेशान था कि ना तो ऑफिस का काम कर पाता था और ना ही घर से बाहर निकलने का मन करता था, लेकिन जब डॉ. ए.के. द्विवेदी सर का ही इलाज शुरू किया तो दवाई की एक दो खुराक में ही आराम हो गया। कुछ साल पहले प%ी भी पाइल्स की समस्या से बहुत परेशान थी तब भी मैं उनके पास ही गया था। मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं और मेरा परिवार करीब साल 2005 से ही सर से जुड़े है।

खान पान का भी रखा ध्यान

डॉक्टर साहब की दी हुई होम्योपैथी दवाईयों के सेवन के दौरान कभी कोई खास परहेज नहीं करना पड़ते है, केवल थोड़ा खान पान में ही परहेज करने होते है। इसलिए हमने हमेशा ही उनके बताए परहेज का विशेष ध्यान रखा है। मैं उनको धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने बेटियों का इलाज कर उन्हें स्वस्थ किया। डॉक्टर साहब आज भी परिवार को हमेशा सही सलाह देते है।

इलाज हुआ तो नौकरी भी पूरी कर पाई-नीलम कौशिक

बैंक में नौकरी के चलते जब जब मुझे स्पॉन्डिलाइटिस का दर्द उठता था तो लगता था कुछ साल की नौकरी बची है पूरी भी कर पाऊंगी की नहीं....। करीब 15 साल की नौकरी बची थी लेकिन स्पॉन्डिलाइटिस का असहनीय दर्द मेरी हिम्मत को हरा देता था। ठीक से हाथ ऊपर भी है उठा पाती थी और शोल्डर का असहनीय दर्द मुझे रुला रुला देता था।

यह बात संगम नगर निवासी नीलम कौशिक ने शेयर की है। उनकी हालत यह थी कि हाथ उठाना भी उस समय मुश्किल रहता था। इस कारण काफी तकलीफ रहती थी। उन्होंने कहा मुझे एक रिश्तेदार से होम्योपैथी डॉ. द्विवेदी सर के बारे में पता चला। इलाज के बाद दर्द में राहत मिली। फिर हाथ उठाने में भी परेशानी नहीं होती।

3 माह में ही मिल गई राहत

नीलम कौशिक ने बताया लगातार बैंक में ड्यूटी के कारण कंधे में दर्द रहता था। बैंक में सुबह 10 से शाम 6 बजे तक काम रहता। कैश काउंटर पर बैठती थी तो एक जैसी पोजिशन में बैठना पड़ता था। उठना भी कम होता था। कई बार दर्द रहता पर ठीक हो जाता लेकिन आराम नहीं मिलता था। डॉ. एके द्विवेदी से इलाज के 3 महीने में ही फायदा होने लगा।

देरी से नहीं जल्दी होता है फायदा

नीलम कहती है डॉ. द्विवेदी का व्यवहार काफी अच्छा है। उन्हें जब तकलीफ बताओ तो वह कहते है अभी ठीक करा देंगे। उससे ही काफी अच्छा लगता है। पहला डोज उन्होंने मुझे अपने क्लीनिक पर ही दे दिया था और उससे ही लगने लगा था कि अब ठीक हो जाएगा। उनकी दवाई में पैन किलर नहीं रहता है। पैन किलर नुकसान करती है। वह एडवांस होम्योपैथी से इलाज करते है तब ही दवाई लेते ही तुरंत काम करती है। कई लोग कहते है होम्योपैथी के इलाज में देरी से फायदा होता है लेकिन द्विवेदी सर की दवाई में कम समय से ही फायदा होने लग जाता है। शुरू में ज्यादा दवाई देते है। फिर धीरे-धीरे दवाई को कम करते हुए बंद करवा देते है।

पैरों की सूजन भी हो गई ठीक

उन्होंने कहा मेरे इलाज के बाद अब तो ये स्थिति है कि परिवार में किसी को भी जरूरत होती है तो द्विवेदी सर को ही बताते है। अभी कुछ दिन पहले पति को पैर में मोच आ गई थी तो काफी पैर में काफी सूजन आ गई थी। लग रहा था कि पैर में फैक्चर है। चल भी नहीं पा रहे थे। 4 दिन द्विवेदी सर की दवाई के बाद काफी फायदा हुआ। वो चलने फिरने लग गए और फैक्चर भी नहीं निकला।

सिरदर्द : अब नहीं सिरदर्द होम्योपैथी के संग

सिरदर्द की चिकित्सा होम्योपैथी के लिए एक मायने में सिरदर्द ही है क्योंकि होम्योपैथी में कोई एक भी ऐसी बंधी दवा नहीं जो तत्काल रोगी को राहत पहुंचा सके, जबकि वह तेज सिरदर्द से परेशान हो रहा होता है। सिरदर्द के लिए उपयुक्त औषध खोज लेना इसलिए भी कठिन है क्योंकि अधिकतर सिरदर्द का लक्षण स्वतंत्र रोग के रूप में कम, अनुवांशिक रोग के रूप में अधिक आता है। जैसे सर्दी जुकाम का सिरदर्द, रक्ताधिक्य के कारण आया सिरदर्द, स्नायुविक या वातज सिर पीड़ा, आम बात के कारण सिरदर्द, संधिवात के कारण सिरदर्द, थकानवश आया सिरदर्द, रात्रि जागरण के कारण आया सिरदर्द आदि इसके अलावा अन्य कई संक्रामक ज्वरों के साथ भी सिरदर्द का लक्षण संयुक्त रहता है।

यह सब नामावली दवाई के चुनाव के लिए विशेष महत्व की बात है क्योंकि जब तक सही कारण की चिकित्सा नहीं होगी, तब तक सिरदर्द को हम आराम नहीं कर पायेंगे। इस रोग प्रभेद के साथ कैसे रोग घटता-बढ़ता है तथा दर्द के साथ उत्पन्न अनुषांगिक लक्षणों पर भी ध्यान देकर हमें दवा का चुनाव करना होता है। यदि इस प्रकार से दर्द की आप चिकित्सा करेंगे तो सिरदर्द के लिए आपकों शीघ्र उपयुक्त दवा मिल जायेगी। यदि भारी भरकम रैपर्टरियों के माध्यम से उपयुक्त औषध खोजने का आप प्रयत्न करेंगे तो आप अथाह समुद्र में खो जायेंगे और उस पर भी संभव है हीरा आपको न मिल पाये, क्योंकि उसमें अपार लक्षण अंकित है।

नजले-जुकाम का सिरदर्द

नजले-जुकाम के साथ या उसके दब जाने के बाद जो सिरदर्द पैदा होता है उसकी चिकित्सा निम्न प्रकार की जानी चाहिएः-

- यदि ज्वर के साथ यह लक्षण आये और अन्य कोई दवा निर्देशित न हो तो शुरू में एकोनाइट देना चाहिए। यह या तो सिरदर्द बिल्कुल मिटा देगी या उसमें ऐसा परिवर्तन ला देगी कि बचे-खुचे लक्षण नक्स वोमिका, ब्रायोनिया या बेलेडोना से मिट जायेंगें। एकोनाइट का सिरदर्द प्रायः बातचीत करने पर बढ़ता है।
- जुकाम दब जाने से सिर में धीमा दर्द निरन्तर बना रहें, माथे में भारीपन हो, रात को नाक बंद हो जाये तो प्रमुख दवा नक्स वोमिका है।
- ललाट में चीर फाड़ सा दर्द, नाक से गाढ़ा श्लेष्मा गिरना, सिर को बांधने से आराम-ऐसे में ब्रायोनिया से बढ़कर कोई गुणकारी दवा नहीं।

- जुकाम एकदम बंद हो जाये और उसके परिणाम स्वरूप सिर में भयंकर वेदना हो तो एकोनाइट बहुत लाभकारी। इस स्थिति की दूसरी दवा बेलेडोना भी है जबकि यह प्रतीत हो कि खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।
- यदि जरा सी हवा लगते ही दर्द बढ़ जाये, ब्रह्मरंध्र अत्यन्त असहिष्णु व स्पर्शकातर हो तो चायना उपयोगी।
- सिरदर्द खुली हवा में, पढ़ते या सोचते समय बढ़े, सिर बहुत भारी हो, नाक से सर्दी बहे, वहां जलन व खुजली हो, नाक बंद हो जाए तो सिना दिया जाये।
- सर्दी स्त्राव बहुत ज्यादा, चरपरा व जलन वाला, स्वरभंग, बैचेनी, कान में भौं-भौं की सी आवाज, ऐसे में आर्स एल्बम उपयोगी है।

रक्ताधिक्य जनित सिरदर्द

इसमें रोगी का मुखमण्डल तमतमाया, आंखें लाल, साथ में सिर पीड़ा, इसके साथ गरमी, गर्दन की शिरायें उछलती सी, लेट जाने या झुकने से सिरदर्द बढ़ जाता हो, कभी-कभी खड़े होने से आराम मिलता है। लू लग जाने या तेज धूप में काम करने पर भी रक्त संचय जनित सिरदर्द पैदा हो जाता है। इस दशा में निम्न औषधियां उपयुक्त रहती हैं :-

ग्लोनाइन - सिर को हिलाने से दर्द बढ़े, बर्फ के सेक से आराम, आंखें व चेहरा लाल, नाड़ी द्रुत, आंखे टकटकी लगाये सी- इस दशा में ग्लोनाइन बहुत उपयोगी। सिर पर बर्फ का सेक न किया जाये, पांवों को गर्म पानी में डुबोये रखकर बाद में उनको फलालेन से अच्छी तरह पोंछ दें।

एकोनाइट- इस दशा की यह दूसरी महत्व की दवा है। रोगी को प्रदाह के लक्षण आ जाये तब भी उपयोगी। पहले इसको देने के बाद फिर आप बैलेडोना, ब्रायो व नक्स में से चुनकर कोई भी उपयुक्त दवा देंगे तो रोगी के उप्रदव तत्काल दूर हो जायेंगे।

यदि सिर को हिलाने से दर्द बड़े तो ब्रायोनिया और सिर को हिलाने-डुलाने से दर्द घट जाये तो रस टाक्स उपयोगी है। यदि सिरदर्द के साथ गर्दन की नाड़ियों में भारी टपक, कनपटियों में स्पन्दन हो और सिर पर ऐसा लगे मानों बहुत बोझा रखा है तो बैलेडोना से बढ़कर कोई औषध नहीं। इसमें अचेतना, बुदबुदा प्रलाप, उठ-उठकर भागना, मुंह के कोनों को फड़कना-सब लक्षण हैं।

किसी भी दवा के चुनाव से पहले रोगी के लक्षण पहचानना जरूरी होता है तथा दवा के प्रयोग से पहले होम्योपैथिक विशेषज्ञ से सलाह लेना भी जरूरी होता है।

एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर द्वारा 11वीं नेशनल कॉफ्रेंस 'होम्योपैथी महाकुंभ-2025' होटल अमर विलास में संपन्न

कम्युनिटी हेल्थ एवं वेलफेयर के अंतर्गत भारत सरकार के एनीमिया मुक्त अभियान के तत्वावधान में एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर द्वारा एनीमिया जागरूकता रथ सप्ताह का समापन होम्योपैथी महाकुंभ-2025 11वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस के साथ रविवार को हुआ। 11वीं नेशनल कॉन्फ्रेंस में इनोवेशन इन होम्योपैथी पर विस्तार से बात की गई। देश के अलग अलग हिस्सों से आए डॉक्टर्स ने होम्योपैथी की सहायता व अपनी प्रैक्टिस और रिसर्च के माध्यम किए जा रहे उपचार के बारे में बताया। साथ ही वर्तमान दौर में चिकित्सा क्षेत्र में टेक्नोलॉजी की मदद लेने की बात कही। इसके अलावा जीएसआईटीएस कॉलेज में शुरू किए गए बायोटेक्नोलॉजी कोर्स में होम्योपैथी चिकित्सा को भी शामिल किए जाने की पहल करने का निर्णय लिया।

होम्योपैथिक चिकित्सा क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए आयुष रत्न और आयुष मित्र से चिकित्सकों को किया अलंकृत

डॉ. रेनू मित्तल

डॉ. नीतेश पुरोहित

डॉ. नरेंद्र पाटीदार

डॉ. ए.के. द्विवेदी

डॉ. जयेश पटेल

डॉ. राजश्री राठवा

डॉ. नैना टेमले

डॉ. अर्पित चोपड़ा जैन

डॉ. संगीता पानेरी

डॉ. आनंद मिश्रा

डॉ. समीर चौक्कर

डॉ. उषा जैन

अब जरूरी है कि सिकल सेल के मरीजों का इलाज सुनिश्चित किया जाए - मंगु भाई पटेल

मध्य प्रदेश में सिकल सेल एनीमिया जैसी गंभीर बीमारी के उन्मूलन के लिए उल्लेखनीय प्रयास किए जा रहे हैं। राज्यपाल श्री मंगु भाई पटेल ने इंदौर में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कार्यपरिषद सदस्य डॉ. एके द्विवेदी से बातचीत में बताया कि प्रदेश में सिकल सेल मरीजों का स्क्रीनिंग 80 - 90 प्रतिशत तक हो चुका है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि अब जरूरी है कि इन मरीजों का इलाज सुनिश्चित किया जाए। साथ ही, उन्होंने यह भी कहा कि वे तो केवल एक निमित्त मात्र हैं, लेकिन अगर एलोपैथी और आयुष (आयुर्वेद - होम्योपैथी) चिकित्सक मिलकर कुछ परिवारों को इस बीमारी से बचाने में सफल होते हैं, तो यह समाज के लिए बहुत बड़ा योगदान होगा।

डॉ. एके द्विवेदी ने राज्यपाल को और देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के कुलाधिपति को जानकारी दी कि शीघ्र ही विश्वविद्यालय के कुलगुरु राकेश सिंघई जी के नेतृत्व में केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (CCRH), आयुष मंत्रालय भारत सरकार का एक रिसर्च सेंटर इंदौर और झाबुआ में स्थापित किया जाएगा। इस सेंटर में सिकल सेल जैसी असाध्य बीमारियों का इलाज होम्योपैथी चिकित्सा द्वारा किया जाएगा, और इस पहल में विश्वविद्यालय को कोई खर्च नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि पूरा खर्च (CCRH), आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा वहन किया जाएगा।

इस परियोजना में इंदौर सांसद श्री शंकर लालवानी जी के सहयोग की भी जानकारी दी गई, जिसे राज्यपाल ने सराहा। श्री मंगु भाई पटेल ने इस महत्वाकांक्षी योजना की शीघ्र स्थापना हेतु शुभकामनाएं दी और कहा कि ऐसे पुनीत कार्यों को सभी को मिलकर करना चाहिए ताकि समाज का कल्याण हो सके।

साथ ही, डॉ. द्विवेदी ने सिकल सेल के मरीजों के परिवारों के लिए शादी पूर्व जांच के नियम बनाने की अपील की, जिसे राज्यपाल ने स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि उनका प्रयास होगा कि सिकल सेल के मरीजों के परिजनों को आपस में बातचीत करने के लिए प्रेरित किया जाए और शादी से पहले जांच कराने की प्रक्रिया को अनिवार्य किया जाए, ताकि अगली पीढ़ी में इस बीमारी को फैलने से रोका जा सके।

मध्य प्रदेश सरकार और अन्य संबंधित संस्थाओं की यह पहल राज्य में सिकल सेल के उन्मूलन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

देवी अहिल्या मालवा विस्तार सम्मान से सम्मानित

मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा जी ने एनिमिया जागरूकता अभियान के द्वारा लोगों में रक्ताल्पता की समग्र जानकारी पंहुचाने तथा घर में उपस्थित खाद्य पदार्थों से रक्त बढ़ाने के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों हेतु डॉ. ए.के. द्विवेदी को देवी अहिल्या मालवा विस्तार सम्मान से सम्मानित किया।

इंदौर (मध्यप्रदेश) से 12 वर्षों से प्रकाशित
स्वास्थ्य पर आधारित राष्ट्रीय हिन्दी मासिक स्वास्थ्य पत्रिका

भारत में रह रहे आपके प्रियजन/परिजन को सेहत एवं सूरत की सदस्यता उपहार स्वरूप देने हेतु सादर सम्पर्क कर सकते हैं।
विदेश में रह रहे आपके प्रियजन/परिजन को सेहत एवं सरूत की सदस्यता उपहार स्वरूप ई-मेल द्वारा भी भेजी जा सकती है।
कृपया आपका अनुरोध हमें मेल करें।

drakdindore@gmail.com
sehatsuratindore@gmail.com

Visit us:
www.sehatsurat.com
www.facebook.com/sehatevamsurat

SUBSCRIPTION DETAIL

For 1 Year	For 3 Year	For 5 Year
₹700/-	₹2100/-	₹3500/-

मूल्य ₹60/-

प्रत्येक माह अलग-अलग बीमारियों पर प्रकाशित

पहला सुख निरोगी काया, क्या आपने अभी तक पाया

सेहत एवं सूरत आपके पते पर प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें-

विनय पाण्डेय	दीपक उपाध्याय	राकेश यादव
9893519287	99777 59844	9424083040

G Pay
accepted here
Advanced Homeo Health Centre
+91 97527 20429
9752720429@okbizaxis
BHIM UPI

राष्ट्रीय मासिक स्वास्थ्य पत्रिका
सेहत एवं सूरत

एडवांस्ड आयुष वेलनेस सेंटर
28-ए, ग्रेटर ब्रजेश्वरी, पिपलियाहाना चौराहा, इंदौर
Call: 0731-4989287

कई पाठकों/संस्थानों के विशेष आग्रह पर
लाइफ टाइम तक सेहत एवं सूरत प्राप्त करने के लिए
सहयोग शुल्क मात्र 11000/- रुपए

‘मुझे नींद नहीं आती’

‘मुझे नींद नहीं आती’ आपने अकसर लोगों को यह शिकायत करते सुना होगा। नींद एक जैविक प्रक्रिया है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद बहुत ही जरूरी है। पर्याप्त नींद नहीं लेने से हमारी कार्यक्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है। अनिद्रा के शिकार लोगों को अकसर दिन में इधर-उधर झपकियां लेते देखा जा सकता है।

होम्योपैथी का सहारा ले सकते हैं अनिद्रा के रोगी

अनिद्रा आजकल एक महामारी की तरह फैलती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक आज विश्व में हर पांचवां व्यक्ति अनिद्रा का शिकार है। अनिद्रा का अर्थ है नीद में व्यवधान, नींद उचटना या कम नींद आना, यह दो प्रकार की होती है। पहले प्रकार की अनिद्रा का संबंध उन लोगों से जिन्होंने कभी अच्छी, चैन की नींद का आनंद नहीं लिया हो तथा ये लोग तनाव, घबराहट या अन्य किसी असहनीय पीड़ा से पीड़ित न हो। पहली प्रकार की अनिद्रा से पीड़ित लोगों की नाड़ी की गति तेज तथा शरीर का तापमान अधिक होता है। इनकी बाह्य धमनियां प्रायः संकुचित होती हैं। ये लोग प्रायः हिलते-डुलते रहते हैं। दूसरे प्रकार की अनिद्रा का संबंध उन लोगों की अनिद्रा से है जो किसी न किसी बीमारी से पीड़ित होते हैं जैसे पेट में दर्द, पैरों में बेचैनी, थकान, स्पाइनल कॉर्ड में दर्द आदि। इन बीमारियों से नींद की प्रारंभिक अवस्था में बाधा पहुंचती है।

दूसरे प्रकार की अनिद्रा साइकेट्रीक, साइकोसिस तथा साइकोन्यूरोसिस के मरीजों में आमतौर पर देखी जा सकती है। डर तथा चिंता भी अनिद्रा के कारण हो सकते हैं। डिप्रेशन तथा मेनियक डिप्रेशन से भी अनिद्रा की शिकायत हो सकती है। सोने पर एक बार तो नींद आ जाती है परन्तु सुबह जल्दी आंख खुल जाती है तथा बाद में रोगी सो नहीं पाता। सन्निपात तथा कोई काल्पनिक डर भी अनिद्रा के कारण हो सकते हैं।

चिकित्सा की होम्योपैथिक शाखा के अंतर्गत अनेक ऐसी दवाइयां हैं जिनका प्रयोग अनिद्रा के उपचार के लिए किया जाता है। मरीज के लक्षणों के आधार पर कोई भी दवा उसे दी जा सकती है।

आर्सेनिक एलबम – यह दवा उन मरीजों को दी जाती है जो किसी मानसिक बेचैनी के कारण करवटें बदलते रहते हैं। वह शारीरिक रूप से इतना कमजोर होता है कि उसका चलना-फिरना भी मुश्किल होता है। मरीज को निरंतर मृत्यु का भय बना रहता है। वह इलाज के प्रति निराश हो चुका होता है। ऐसे रोगी को बार-बार थोड़े पानी की प्यास लगती रहती है।

केनाबिस इंडिका – यह उन रोगियों के लिए उपयुक्त होती है जो भय, भ्रांति तथा मानसिक दुर्बलता के शिकार होते हैं। ऐसे रोगी अकसर मरे हुए लोगों को सपने में देखते हैं। उन्हें लगता है कि वह पागल हो जाएंगे। ऐसा रोगी लगातार बोलता रहता है और सिर हिलाता रहता है। अकसर बोलते-बोलते वह यह भी भूल जाता है कि उसे आगे क्या बोलना है। विनम्र स्वभाव का व्यक्ति यदि उद्दण्ड स्वभाव हो जाए तो उसे यह दवा दी जाती है।

हायोसाइमस नाइग्रा – इसमें मरीज बहुत बातूनी और ईर्ष्यालु होता है। इस प्रकार का रोगी बहुत डरता है। उसे हर बात में डर लगता है जैसे अकेले रहने का डर, विष खिलाने का डर, किसी षड्यंत्र का डर आदि। बच्चों में नींद न आना, नींद आते ही डर जाना, बिस्तर से निकलने या भागने की कोशिश करना जैसे लक्षण होने पर यह दवा दी जाती है।

कैफिया क्रूडा – यह दवा उन रोगियों के लिए उचित है जिन्हें रात को नींद नहीं आती। वे अकसर भविष्य के बारे में चिंता करते रहते हैं। ऐसे रोगी अचानक ही हंसने या रोने लगते हैं ऐसे रोगियों को बहुत अधिक चिंता, बातचीत या मानसिक परिश्रम करने में सिर में तेज दर्द होता है।

एकोनाइटम नैपेलस – इसमें रोगी अकसर बैचेन रहता है जिससे उसे नींद नहीं आती। उसे इतना डर लगता है कि वह बेहोश भी हो जाता है। स्थित गंभीर होने पर रोगी को मरने का डर लगने लगता है। रोगी अकसर डर के कारण घर से नहीं निकलता, भीड़भाड़ वाली जगहों से भी बचता है। उसे बार-बार पानी की प्यास भी लगती है।

इग्नेशिया अमारा – यह दवा उन रोगियों को दी जाती है जो शोक, भय या दुख की वजह से एकाएक बेहोश हो जाते हैं। उसे तम्बाकू या धुंआ सहन नहीं होता। उसके सिर में भी दर्द होता है।

ल्यूकोरिया का ईलाज होम्योपैथी से

वर्तमान समय में महिलाओं की एक प्रमुख व्याधि है, जो साधारणतया 13 वर्ष से 50 वर्ष की बहुत सी स्त्रियों में किसी न किसी रूप में व्याप्त है परन्तु महिलाएं शील के कारण उसको छिपाती है। इसको बोलचाल की भाषा में श्वेत प्रदर या सफेद पानी कहा जाता है।

हिन्दी में प्रदर (श्वेत प्रदर) यूनानी में सैनालुर्रहम व अंग्रेजी में ल्युकोरिया कहते हैं। यह एक ऐसा रोग है जिसमें कोई दर्द व पीड़ा नहीं होती, परन्तु उनके गुप्त अंग से एक प्रकार का तरल पदार्थ रिसता रहता है जो विभिन्न प्रकार व रंग का होता है। इसके कारण उनके स्वास्थ्य पर विपरित प्रभाव पड़ता है व उनके शरीर को कमजोर कर देता है। अतः इस पर उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके कारणों पर विचार करने पर उनको दो भागों में बांट सकते हैं -

(1) सामान्य कारण - तनाव युक्त दिनचर्या, तेज मिर्च मसालों का सेवन, पेडू व योनी के स्थान पर कोई ज्यादा आघात, क्रोध व द्वेष, अधिक सन्तानोत्पत्ति, शारीरिक स्वच्छता का अभाव, बढ़ता प्रदूषण व फास्ट फूड आदि का अधिक सेवन आदि हैं।

(2) विशेष कारण - गर्भाशय में सूजन, पेशाब में जलन, खून की कमी, कब्ज, मधुमेह, थाईराईड ग्रंथि की घटत-बढ़त होना, ऋतु स्त्राव में गड़बड़ी, योनी संक्रमण इसके उपरान्त कुछ एन्टीबायोटिक दवाओं का अधिक सेवन भी इसको प्रोत्साहित करते हैं।

होम्योपैथी उपचार

विशेषज्ञों के अनुसार इस व्याधि को तेज दवाओं से दबाने से रोगी के स्वास्थ्य पर आगे जाकर बहुत विपरीत प्रभाव पड़ता है क्योंकि यह अन्दर की गंदगी को बाहर निकालने का कार्य करती है, अतः होम्योपैथी द्वारा लक्षणों के अनुसार औषधियों का उपयोग ज्यादा लाभकारी है।

सीपिया : गर्भाशय संबंधी रोगों की मुख्य औषधि, पेट के निचले हिस्से में लगातार बोझ बने रहने की अनुभूति जैसे भीतर के सभी अंग बाहर निकल पड़ेंगे। शरीर दुबला, स्त्राव पतला, दूधिया तथा कब्ज आदि।

पल्सेटिला : यह भी स्त्री रोगों की एक प्रमुख औषधि है। साधारण प्रदर में जब स्त्राव गाढ़ा, बिना लगने वाला हो। इसकी रोगिणी का नम्र स्वभाव, जरा सा भी विरोध सहन न कर पाना, सहानुभूति पसन्द करना, ठण्डी हवा अच्छी लगना व प्यास का अभाव रहना, शरीर मोटापा लिये हो व माहवारी के समय दर्द रहना आदि इसके मुख्य लक्षण हैं।

क्रियोजोट : इसमें स्त्राव चमड़ी को लगने वाला व दुर्गन्ध युक्त होता है, इसके साथ-साथ बहुत कमजोरी व कमर दर्द भी रहना है।

बोरेक्स : दही या अण्डे की सफेदी जैसा स्त्राव अधिक मात्रा में जैसे गरम पानी बह रहा हो, ऐसा एहसास होना।

एल्युमिना : पुराना, पीला, पतला टांगों तक बहने वाला स्राव व सख्त कब्ज आदि प्रायः मासिक के बाद।

कल्केरिया कार्ब : स्त्राव पतला व दूधिया, यह अविवाहित लड़कियों के प्रदर में ज्यादा उपयोगी है। शरीर कुछ मोटापा लिये रहता है।

कार्बो वेज : जब स्त्राव होता है तो अच्छा महसूस होता है, स्त्राव बंद होने से कुछ तबियत गिर जाती है। पेट में गैस ज्यादा होती है।

हाईड्रेस्टिस : गाढ़ा, पीला लगने वाला सूतदार तार की तरह चिपचिपा स्त्राव, पेट में कमजोरी, कब्ज, हृदय की धड़कन कुछ तेज हो।

ओवा टोस्टा : यह हर प्रकार के प्रदर में उपयोगी है व प्रदर की मुख्य दवा है।

यदि चयनित औषधियों से लाभ न हो तो किसी योग्य होम्योपैथिक चिकित्सा विशेषज्ञ से सलाह लेना लाभकर होगा।

महज तीन माह की दवाई ने पाइल्स से दिलाया छुटकारा-अविनाश बाहेती

पाइल्स एक ऐसी बीमारी है जो न तो किसी को बताई जा सकती है और न ही ये सहन की जा सकती है। ना तो बैठ पाते है न लेट पाते है, बल्कि चलने में भी बहुत परेशानी होती थी। पाइल्स में सी ब्लीडिंग होने पर कमजोरी अलग होने लगती है।

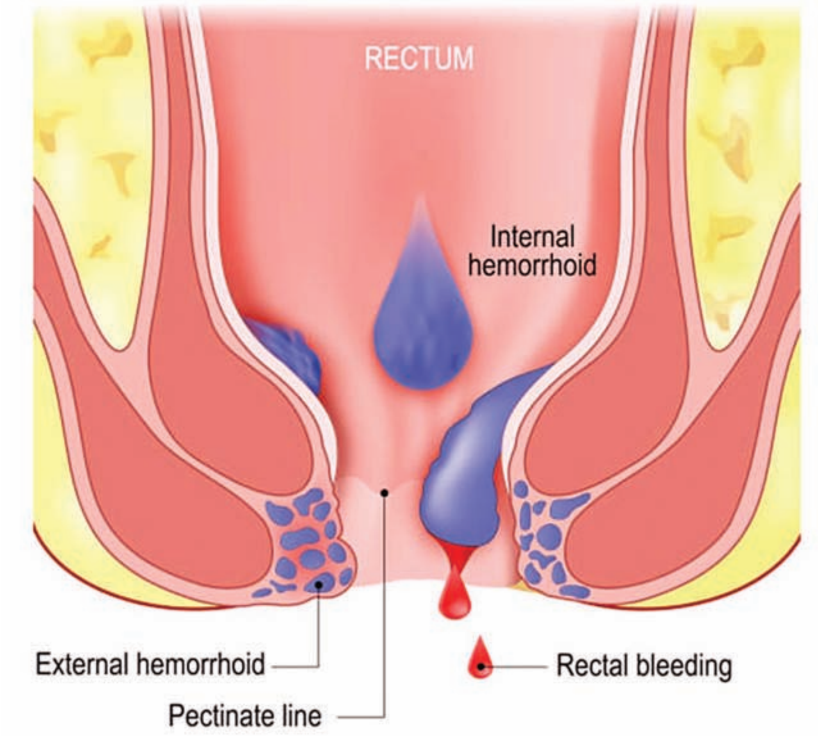

ऐसा ही कुछ 40 वर्षीय अविनाश बाहेती के साथ हुआ। दरअसल, उन्हें छह साल पहले पाइल्स हो गए थे, उन्हें पाइल्स में असहनीय तकलीफ थी। शुरुआत में तो उन्हें कुछ पता ही नहीं चला कि लेकिन जब पाइल्स में से खून निकलने लगा तो कमजोरी होने लगी और फिर धीरे-धीरे तकलीफ बढ़ गई।

अविनाश ने बताया, तकलीफ जब बहुत बढ़ गई तो मैंने चेकअप कराया और कुछ जांचों के दौरान पता चला की मेरा हीमोग्लोबिन 5 है जो कि बहुत ही कम था। कुछ ने खून चढ़ाने की सलाह दी लेकिन तब ही हमने होम्योपैथी चिकित्सक डॉक्टर एके द्विवेदी को बताया और डॉ. एके द्विवेदी का उपचार शुरू किया। द्विवेदी सर ने मुझे ६माह की दवाई दी और देखते ही देखते मेरा हिमोग्लोबिन 12 तक पहुंच गया। मैंने सोचा भी नहीं था कि इतनी बड़ी तकलीफ से मुझे इतनी जल्दी आराम हो जाएगा।

ऑपरेशन की नौबत ही नहीं आई

अविनाश ने बताया मुझे बिजनेस के सिलसिले में अक्सर शहर से बाहर जाना पड़ता था जब मुझे पाइल्स हुआ तो मुझे समझ आया 'यादा बाहर का खाना और तला-गला खाने से मुझे ये तकलीफ हुई। पाइल्स की परेशानी इस हद तक थी की ऑपरेशन तक की नौबत आ गई थी लेकिन होम्योपैथी की तीन माह की दवाई के बाद न तो ऑपरेशन कराने की जररुत पड़ी और बल्कि खून निकलना भी बंद हो गया। खासतौर पर मैं बैठ-उठ पा रहा हूं ये मेरे लिए सबसे 'यादा राहत पहुंचानी वाली बात थी।

डर के कारण सालभर तक टाला ट्रीटमेंट

उन्होंने कहा कई बार वाशरुम जाता था तो खून देखकर घबरा जाता था। इस बीमारी के इलाज और ऑपरेशन से बहुत डर लगता था। घरवाले हालत देखकर सलाह देते थे कि इलाज करा लें लेकिन हिम्मत ही नहीं होती थी और तकलीफ के साथ ही एक साल बीत गया। लोग कहते थे मेरा रंग भी काला पड़ने लगा है। बड़ी हिम्मत करके होम्यौपीथी डॉ. एके द्विवेदी के पास पहुंचा और उन्होंने खाने में कुछ परहेज बताएं और एबीसी जूस लेने का बोला। गुड़ भी खाना शुरू किया, जिससे मेरा हिमोग्लोबिन काफी हद तक बढ़ गया।

देखी नहीं जाती थी तकलीफ

अविनाश की संगिनी नम्रता ने बताया पति की तकलीफ देखी नहीं जाती थी उनका अहसनीय दर्द देखकर मैं भी कई बार हिम्मत देते-देते खुद ही निराश हो जाती थी लेकिन होम्यौपीथी के ट्रीटमेंट से देखते ही देखते तकलीफ दूर हो गई। हमे केवल उनके बताए हुए परहेज और दवाइयों का ध्यान रखा बाकि उन्होंने पहली मुलाकात में ही कह दिया था कि ड्क्षचता मत करो ये तकलीफ कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएगी और वाकई ऐसी हुआ। हम उनके बहुत आभारी है।

जिगर का जिगर होम्योपैथी

दिल, दिमाग, गुर्दा और जिगर, मनुष्य के शरीर को चलाने वाले सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। जिगरः यह एक ऐसी रोमांचकारी फैक्टरी है, जिसमें कई जीवनदायी तत्वों का या तो निर्माण होता है या वे विशेष पदार्थ में परिवर्तित होते हैं। कई दूषित व विषैले पदार्थों को जिगर विषमुक्त करता है और शरीर को स्वस्थ रखता है।

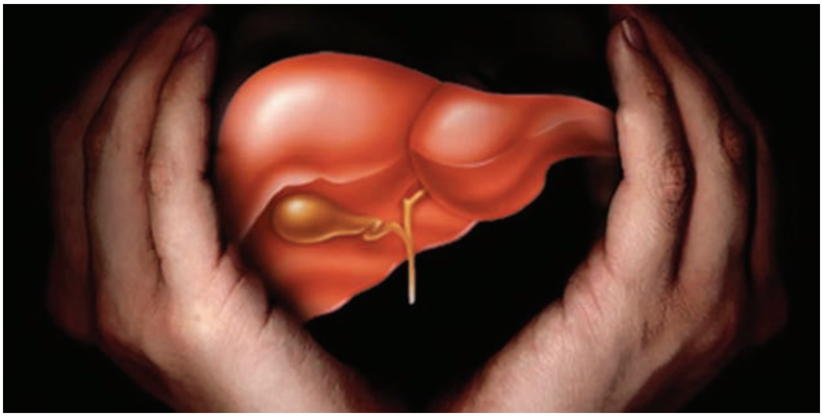

जिगर दो बड़े पिंडों (लोब्स) से बना होता है, एक दायां और दूसरा बायां। प्रत्येक बड़े पिंड में सैकड़ों छोटे-छोटे पिंड होते हैं। इन पिंडों का निर्माण लाखों विशेष प्रकार की कोशिकाओं हेप्टोसाइट द्वारा होता है। जैसे भवन निर्माण में एक के ऊपर एक ईंट रखी जाती है, ठीक इसी प्रकार पिंडों की रचना होती है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि 9 मिली ग्राम जिगर में करीब एक लाख 71,000 कोशिकाएं होती हैं। ये कोशिकाएं रक्त-धमनियों व बाइल ले जाने वाली नालियों से जुड़ी रहती हैं।

प्रकृति ने जिगर के महत्व को देखते हुए इसे इतनी क्षमता प्रदान की है कि यदि जिगर का दो-तिहाई भाग भी किसी कारण से खराब हो जाये तब भी शेष एक-तिहाई भाग शरीर के कार्यों का संचालन कर सकता है।

जिगर के काम

1. जो पदार्थ हम खाते हैं उन पदार्थों के उपापचय (मेटाबोलिज्म) में जिगर सक्रिय भाग लेता है। खाद्य पदार्थों के प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और चर्बी को जिगर विशेष तत्वों में परिवर्तित कर इनका भंडारण करता है ताकि जरूरत पड़ने पर इनका उपयोग किया जा सके। जैसे प्रोटीन को परिवर्तित कर एलब्यूमिन, शक्कर ग्लायकोजिन, चर्बी को कोलेस्ट्राल ट्रायग्लिसराइड और लिपोप्रोटीन्स के रूप में परिवर्तित कर भंडार बनाता है। इसी प्रकार यह विटामिनों, खासकर विटामिन सी, विटामिन बी-12, विटामिन ए, आदि का भी भंडारण करता है। विभिन्न शारीरिक क्रियाओं में काम आने वाले रक्तकण व भोजन रस को भी जिगर ही तैयार करता है।

2. जिगर का एक और महत्वपूर्ण कार्य है पित्त अर्थात बाइल को बनाना। यह पित्त विषैले पदार्थों का विषैलापन दूर करता है और भोजन के अन्य तत्वों को जज्ब करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

3. इसी प्रकार रक्तकण व दूसरी शारीरिक क्रियाओं में काम आने वाले तत्व भी जिगर में बनते हैं।

4. विषैले या अवांछित पदार्थों को शरीर से बाहर निकालना भी जिगर का ही काम है। उदाहरण के तौर पर, अमोनिया शरीर में प्रोटीन के जज्ब होने से बनती है। शरीर में यदि इसकी मात्रा सामान्य से ज्यादा हो जाए तो यह खासकर मस्तिष्क के लिए अति हानिकारक होती है। जिगर कुछ रासायनिक क्रियाओं द्वारा इसे शरीर से बाहर निकाल देता है। इसी प्रकार कई और विषैले तत्वों को भी जिगर शरीर से बाहर निकालता है।

पीलिया में प्रयोग की जाने वाली प्रमुख दवाईयां निम्नलिखित हैं-
ब्रायनिया अल्बा, चेलिडोनियम, फॉस्फोरस, कालमेघ, सल्फर, मर्कसाल, चाइना, कार्डस मेरिनस इत्यादि। इन दवाईयों का चयन होम्योपैथिक चिकित्सक की देखरेख में उचित खानपान के साथ प्रयोग करने से पीलिया का रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है तथा उसके रक्त में सिरम बिलीरूबीन व एसजीपीटी तथा एसजीओटी

जिगर की बीमारियां

जिगर कई विकृतियों का शिकार हो जाता है और इन विकृतियों के कारण इसकी कार्यप्रणाली छिन्न-भिन्न हो जाती है। इसमें प्रमुख हैं :

1. जिगर की कोशिकाओं की बीमारियां-जिनके कारण जिगर की कोशिकाएं अपनी काम पूरा नहीं कर पाती हैं। (अ) संक्रमण (इन्फैशन), (ब) दवाओं व विषैले तत्वों द्वारा -जैसे बुखार में काम आने वाली पैरासिटामाल, (स) शराब का अति सेवन।

2. रक्त-प्रवाह में बाधा या असंतुलन, जिससे जिगर के अन्दर का रक्तचाप बढ़ जाता है।

3. बाइल अर्थात पित्त बनाने या प्रवास संबंधी समस्याएं।

जिगर रोग के लक्षण

1. भूख न लगना, जी मिचलाना, उल्टी होना, खाने से अरूचि, खासकर चर्बीदार पदार्थों से तथा बुखार आदि जिगर रोग की प्रारम्भिक अवस्था के लक्षण हैं।

2. सामान्य और मुख्य लक्षण तो यह है कि प्रभावित व्यक्ति की आंख, तालू, नाखून और यहां तक कि त्वचा पीली हो जाती है, जिसे पीलिया कहते हैं। इस लक्षण के प्रकट होने पर लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

3. शरीर पर मकड़ी के जाले की तरह के अचानक ही 2 या 2 से अधिक छपाकों का निकलना। यह छपके, जिन्हें स्पाइडर मार्क भी कहते हैं, शरीर के ऊपरी भाग, मुंह या बाजू पर निकलते हैं। एक और तो यह जिगर की बीमारी के घोतक हैं, दूसरी ओर इनका कम होना जिगर की कार्यप्रणाली में सुधार का परिचायक है।

4. हथेली व पैर के तलवों पर खुरदरी व सफेद लम्बी लकीरें तथा नाखूनों का गरम व लाल रहना। (इसे हिपेटिक पास कहते हैं)।

5. नाखूनों का आखिरी हिस्सा सफेद हो जाता है और खुरदरी व सफेद लम्बी लकीरें नाखूनों पर आने लगती हैं। यह जिगर द्वारा प्रोटीन के कम बनने के कारण होता है।

साईनुसाईटिस

बच्चों की बीमारी का माँ जैसा इलाज- होम्योपैथी

नासिका के साथ वायु से भरे कक्ष को साईनस कहते हैं, जो वायु को फिल्टर करते हैं और वायु के तापमान और आर्द्रता को कायम रखते हैं। साईनस के संक्रमण को साईनुसाईटिस कहते हैं।

कारण एवं चिन्ह

- उत्तेजक पदार्थ जैसे तेज भाप, वायु, प्रदूषण और धूल इत्यादि से एलर्जी।
- नाक, मुंह, गला, दांत या टांसिल से संक्रमण प्रसार।

लक्षण

- भिन्न-भिन्न साईनस के संक्रमण के लक्षण भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।
- मस्तक एवं आंखों के ऊपरी हिस्से में दर्द या भारीपन एवं स्पर्श के प्रति संवेदनशीलता ।
- नाक के पीछे से गले में बलगम का गिरना।
- बंद नाक से साथ प्रत्यावर्ती (बार-बार) खांसी एवं जुकाम -
- अगर इसका ठीक से इलाज न हो तो यह पुराने साईनुसाईटिस में परिवर्तित हो सकता है।

क्या करें क्या न करें

- भाप लें
- धूल और धुएं से बचें
- पर्याप्त आराम करें
- गर्म पेयों जैसे सूप, दूध, चाय इत्यादि का सेवन करें।

होम्योपैथिक उपचार

इन विकारों में प्रयोग होने वाली होम्योपैथिक औषधियां निम्न हैं लेकिन इनके प्रयोग से योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें।

- लक्षणों का सर्दियों में बढ़ना, सिर हिलाने से सिर में दर्द होना, नाक बंद होना, विशेष रूप से ठंडी हवा में जाने पर नाक से गाढ़ा एवं बदबूदार स्त्राव, बच्चे का ठंडी वायु के प्रति संवेदनशील होना हो तो हिपर सल्फ्यूरिकम 30 का प्रयोग कर सकत हैं।
- नाक से गाढ़ा चिपचिपा, हरा-पीला स्त्राव, मस्तक एवं नाक की मूल में दर्द, नाक बंद महसूस करना आदि लक्षण हो तो काली बाइक्रोमिकम 30 का प्रयोग करें।
- आंखों के ऊपर या सिर के शीर्ष भाग में दर्द, सिरदर्द का धूप में बढ़ना और दबाने और ढकने से आराम मिलना, बंद नाक का गर्म कमरे में बढ़ना, मरीज का चिड़चिड़ा और अति संवेदनशील होना, प्रकाश, गंध और शोर का बर्दाश्त न होने के लक्षण हों तो नक्सवामिका 30 का प्रयोग करें।
- सिर के दाएं भाग में दर्द या दायी आंख के ऊपर दर्द होना, दर्द का धूप में बढ़ना खासतौर से सूर्योदय और सूर्यास्त के मध्य, दर्द में लेटने और सोने से आराम मिलना, आंखों में जलन का एहसास और गालों में लालिमा में सेन्गुनेरिया कैनाडैन्सिस 30 का प्रयोग लाभदायक होगा।
- इसके अतिरिक्त नैट्रमम्योर बेलाडोना एलियम सीपा, सैवाडिला आदि औषधियां लक्षणों के आधार पर प्रयोग कर सकते हैं।
- दूध से एलर्जी के रोगी के लिए नेट्रम कार्ब का उपयोग कर सकते हैं।

मेरी जिन्दगी बदल गई...- उषा जैन

एनीमिया महिलाओं की सबसे गंभीर बीमारियों में से एक है। इस बीमारी का समय पर इलाज होना बहुत जरूरी है लेकिन किसी भी बीमारी को जड़ से खत्म करने में दवाइयों के साथ साथ डॉक्टर का पॉजिटिव एटीट्यूड भी बहुत मायने रखता है...। यह कहना है प्रोफेसर डॉ. उषा जैन का।

दरअसल, प्रोफेसर डॉ. उषा जैन क्रॉनिक एनीमिया से पिछले करीब 25 सालों से पीड़ित थी, उन्हें कोई भी काम करते वक्त काफी थकान हो जाती थी। सभी तरह के डॉक्टर को दिखाने के बावजूद उन्हें किसी भी तरह का आराम नहीं हो रहा था वो एनीमिया से काफी परेशान थी।एक दिन उन्हें होम्योपैथिक चिकित्सक डॉक्टर ए. के. द्विवेदी के बारे में पता चला और वे उनके इंदौर गीता भवन स्थित एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर मयंक अपार्टमेंट पहुंची और उनसे अपनी परेशानी (बीमारी) बताई।

उषा जैन ने डॉ. ए.के. द्विवेदी को बताया कि मुझे विटामिन डिफिशिएंसी एनीमिया है इसलिए जब जब मेरा हीमोग्लोबिन कम होता है तो दिक्कतें और बढ़ जाती है जैसे थकान होना, एनर्जी लेवल डाउन होना, स्कीन और हेयर पर भी असर दिखता है। प्रोफेसर डॉ. उषा जैन ने डॉ. ए.के. द्विवेदी को यह भी बताया कि उन्होंने पूर्व में दूसरी सभी चिकित्सा ट्राई की लेकिन उनका कोई फायदा नहीं हुआ।

प्रोफेसर डॉ. उषा जैन ने साक्षात्कार के दौरान बताया कि डॉ. द्विवेदी से हुई मुलाक़ात ने वाकई उनकी जिंदगी बदल दी। वरना डॉ. द्विवेदी से मिलने के पहले उन्होंने यह मान लिया था कि अब उन्हें विदेशों में जाकर ही इलाज कराना पड़ेगा। उषा जैन ने बताया कि डॉ. द्विवेदी के गीता भवन स्थित सेंटर में लगे पोस्टर्स देखकर ही तसल्ली और पूरा भरोसा हो गया था कि अब मुझे पूरी तरह से आराम मिल जाएगा इसके बाद डॉ. द्विवेदी से मिलकर जब मैंने उनसे कहा कि क्या आपको लगता है कि मैं पूरी तरह अच्छी हो पाऊंगी, तब उन्होंने उनके केबिन में लगी विष्णु भगवान की तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए कहां विष्णुजी आपको यहां ले आए है तो किसी बात की चिंता न करे।

खान पान में किया बदलाव

उषा जैन ने बताया कि जब मैंने डॉ. द्विवेदी को बताया कि एनीमिया के कारण मुझे बहुत थकान हो जाती है मैं कोई काम नहीं कर पाती हूं तो उन्होंने बड़ी सी स्माइल दी और उन्हें देखकर बस ऐसा लगा जैसे आधी बीमारी खत्म हो गई और बाकी नेगेटिविटी उनके पॉजिटिव एटीट्यूड ने खत्म कर दी। डॉ. द्विवेदी ने मुझे दवाइयों के साथ साथ कुछ परहेज भी बताए और सत्तू, दलिया, पिंड खजूर, ग्रीन सब्जियां और हेल्दी खाद्य पदार्थ खाने के लिए कहा और इन सभी बातों का मैंने पालन किया।

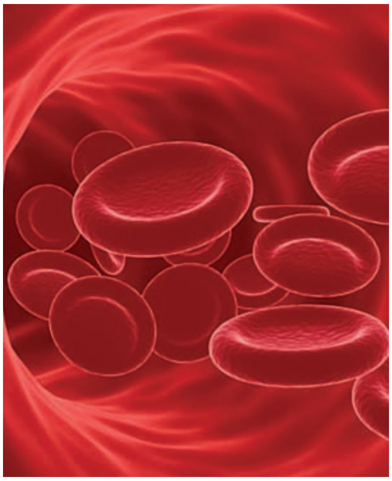

7 से 11 पर पहुंचा हीमोग्लोबिन

उषा जैन ने कहा मैं डॉ. द्विवेदी के पास मार्च 2024 में गई थीं और सिर्फ दो माह में ही मुझे खुद में काफी असर दिखने लगा। अप्रैल माह तक थोड़ी प्रॉब्लम थी क्योंकि तब हीमोग्लोबिन काफी कम था तो एसिडिटी भी बनती थीं। तब उनकी दवाइयों ने तो असर दिखाया ही बाकी लाइफस्टाइल में और खान पान में जो बदलाव किया था उसका असर ये हुआ कि जो मार्च माह में मेरा हीमोग्लोबिन 7 था वो अब 11 तक पहुंच गया है और उम्मीद है कि जल्द ही 13 तक भी पहुंच जाएगा और उसके बाद हम इसको मेंटेन भी करेंगे।

प्रतिमाह कराते है टेस्ट

डॉ. द्विवेदी मरीजों को ठीक करने का जो पॉजिटिव एटीट्यूड रखते है और मरीज में भी पॉजिटिव एटीट्यूड जगाते हैं वो बहुत ही कमाल का है। उनके ट्रीटमेंट के अंदाज़ से ही मुझे कॉन्फिडेंस आने लगा था। उनका डायग्नोसिस का जो तरीका है वो भी काफी अलग है, वो हर 15 दिन, एक माह में एक टेस्ट कराते है और हम उस टेस्ट के रिजल्ट पर भरोसा करते है। मैंने वहीं टेस्ट कही और से भी कराए जो बिलकुल परफेक्ट थी। इस तरह से वो मेडिसन में चेंजेस भी कर रहे थे।

चार से दो टाइम हो गई दवाइयां

शुरुआत में डॉ. द्विवेदी की दवाइयां चार टाइम लेनी होती थी जो अब केवल दो टाइम हो गई है और एनर्जी लेवल भी हाई हो गया है, जो थकान पहले थी अब वो भी नहीं होती थकान एक बहुत ही बड़ी समस्या है, शरीर में कोई और प्रॉब्लम ना हो और थकान हो तो भी कुछ करने का मन नहीं करता, लेकिन अब थकान नहीं है तो एनर्जी भी बनी रहती है।

जटिल बीमारियों की जननी है एनीमिया - डॉ. एके द्विवेदी

होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. एके द्विवेदी के अनुसार एनीमिया बीमारी कोई छोटी बीमारी नहीं है बल्कि कई जटिल बीमारियों की जननी है और इसके विभिन्न प्रकार है जो कई बार लोगों को पता ही नहीं होते है और वे इसे नजरअंदाज कर देते है।

डॉ. द्विवेदी ने बताया एनीमिया का मतलब है हीमोग्लोबिन की मात्रा या लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या एक निश्चित कट-ऑफ पॉइंट से कम होना। यह कट-ऑफ पॉइंट उम्र, लिंग या यहां तक कि भौगोलिक स्थानों जैसे कारकों से प्रभावित होता है। हीमोग्लोबिन लाल रक्त कोशिकाओं में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण प्रोटीन है जो अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करता है। इसकी कमी से अंगों तक ऑक्सीजन की आपूर्ति कम हो जाती है। इसके लिए होम्योपैथिक चिकित्सा बेहतर है।

छह माह के इलाज के बाद ही कैलाश मानसरोवर हो आईं- निर्मला चौकसे

महीनों तक लगातार खांस-खांस कर परेशान हो गई थी, काफी इलाज करवाया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। समझ ही नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है फिर चेस्ट का एक्सरे करवाया वो भी सामान्य आया। दिन में दो बार इन्हेलर लेने लगी। उससे भी चक्कर आने लगे। ऐसा लगता था सोती ही रहूं लेकिन लेटती तो फिर खांसी चलने लग जाती। खांसी के कारण कही जाने में अच्छा नहीं लगता था। करीब एक साल तक परेशान रही। ये बात साल 2010 की है, लेकिन अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूं और इसका पूरा श्रेय होम्योपैथी चिकित्सक डॉ. ए.के. द्विवेदी को जाता है।

यह बात इंदौर निवासी निर्मला चौकसे ने एक इंटरव्यू में शेयर की है। उन्होंने बताया कि बीते कुछ वर्षों से वो पूरी तरह स्वस्थ है लेकिन साल 2010 से 2011 यानि करीब एक साल उनके जीवन का वो दौर था जब वो अपनी बीमारी से इस कदर परेशान थी कि केवल घर ही घर में रहती थी। बाहर जाने का तो सोच ही नहीं पाती थी। उन्हें यही डर लगता था कि कोई उन्हें लगातार खांसते हुए देखेगा तो क्या सोचेंगे बस यही कारण था की वह घर के अंदर सिमटकर रह गई थी।

45 दिन में दिखने लगा दवाई का असर

एक दिन उन्हें डॉ. ए.के. द्विवेदी के बारे में पता चला और फिर उनसे उनका इलाज शुरू हुआ। निर्मला चौकसे ने बताया, साल 2011 में डॉ. ए.के. द्विवेदी के इंदौर गीता भवन स्थित एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर मयंक अपार्टमेंट पहुंची तो उन्हें अपनी पूरी पीड़ा बताई और द्विवेदी जी ने मुझे भरोसा दिलाया कि मैं पूरी तरह ठीक हो जाऊंगी। उन्होंने अपनी दवाइयां शुरू की और कुछ 45 दिन ही हुए थे कि दवाइयों ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया। शुरुआत में तो दिन में करीब 8 से 10 बार दवाइयों का डोज लेना पड़ता था। धीरे-धीरे दवाई कम होती गई।

ठंडे खाना का किया परहेज

दवाई के साथ ठंडा खाना और ठंड में बाहर नहीं निकलना जैसे कुछ परहेज करने के लिए मुझे डॉ. द्विवेदी ने बताया। 6 महीने की दवाई के बाद और ज्यादा फर्क पड़ने लगा। इलाज शुरू होने के

छह माह बाद ही कैलाश मानसरोवर दर्शन के लिए निकल गई जबकि वहां जाने की अनुमति के लिए मेडिकल टेस्ट पास करना पड़ता है। एक टेस्ट में लंग्स की परेशानी, अस्थमा की शिकायत भी देखी जाती है ताकि चलने में, आने जाने में परेशानी ना हो ऑक्सीजन कम ज्यादा होने पर। इस टेस्ट को पास किया वह गए दर्शन करके आए। दवाई लेकर गए थे लेकिन लेने की जरूरत ही नहीं पड़ी। डॉ. द्विवेदी ने बोल दिया था कि आप जाओ मैं हमेशा उपलब्ध रहूंगा कोई परेशानी हुई तो, लेकिन अच्छी बात ये रही कि मैं बिना परेशानी के दर्शन कर लौट आई।

बच्चों को भी गोद में नहीं ले पाती थी

पहले लगातार खांसी चलने के कारण बच्चों को नहीं खिला पाती थी। अपनी पोती को हाथ में लेने से डर लगता था। लगता था कि बच्चों को कही इन्फेक्शन नहीं हो जाए। कपड़े तक खराब हो जाते थे। दिन में दो से तीन बार कपड़े बदलने पड़ते थे। ऐसी हालत थी कि खांसी गले में अटक जाती थी। मुंह खुला रह जाता था और सांस अटक जाती थी। मेरी यह स्थिति देखकर परिवार के लोगों तक की हालत खराब हो जाती थी। सुखी खांसी थी तो समझ नहीं आता क्या दे। सूप बनाकर पिए या कुछ गर्म खिलाए। इन्हेलर लगातार लेने से भूलने की आदत होने लगी नींद बहुत आती थी।

मौसम बदलते ही बिगड़ती थी हालत

करीब 3 से 4 साल दवाई लगातार ली। मौसम जब बदलता है तो परेशानी बढ़ जाती। मौसम बदलने के साथ ही दवाई भी ज्यादा लेना पड़ती थी। आज भी वह दिन याद आते है तो आंसु आ जाते है। तकलीफ के दौर का एक दिन मुझे याद है जब मैं घर के बाहर वॉक कर रही थी और अचानक ठंडी हवा चलने लगी तो खांसते हुए घर के अंदर आई और खांस खांस कर परेशान हो गई। बीमारी शुरू होने पर तीन महीने बहुत ज्यादा तकलीफ थी। खांसी की परेशानी तो दूर हो गई थी लेकिन मौसम बदलने पर लेती थी दवाई ताकि परेशानी ना हो। अब ना तो मैं कोई दवाई लेती हूं और ना ही मुझे कोई परहेज करना पड़ता है। मैं अब पूरी तरह स्वस्थ हूं।

सांस लेने में दिक्कत आए तो डॉक्टर से संपर्क जरूर करें

होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. ए.के. द्विवेदी ने बताया अस्थमा (दमा) फेफड़ों की एक बीमारी है जिसके कारण अस्थमा के मरीज को सांस लेने में कठिनाई होती है। अस्थमा होने पर श्वास नलियों में सूजन आ जाती है जिससे श्वसन मार्ग सिकुड़ जाता है। श्वसन नली में सिकुड़न के चलते रोगी को सांस लेने में परेशानी, सांस लेते समय आवाज आना, सीने में जकड़न, खांसी जैसी समस्याएं होने लगती हैं। लक्षणों के आधार अस्थमा के दो प्रकार होते हैं- बाहरी और आंतरिक अस्थमा। बाहरी अस्थमा बाहरी एलर्जन के प्रति एक प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया है, जो धूल जैसे बाहरी एलर्जिक चीजों के कारण होता है। आंतरिक अस्थमा कुछ रासायनिक तत्वों को श्वासन द्वारा शरीर में प्रवेश से होता है।

डॉ. द्विवेदी ने कहा अस्थमा के कई लक्षण है जिसे नजर अंदाज नहीं करना चाहिए। इसमें कुछ प्रमुख लक्षण है-

- बलगम वाली खांसी या सूखी खांसी।
- सीने में जकड़न महसूस होना।
- सांस लेने में कठिनाई।
- सांस लेते समय घरघराहट की आवाज आना।
- रात में या सुबह के समय स्थिति और गंभीर हो जाना।
- ठंडी हवा में सांस लेने से हालत गंभीर होना।
- व्यायाम के दौरान स्वोस्यिर और ज्यासदा खराब होना।
- जोर-जोर से सांस लेना, जिस कारण से थकान महसूस होना।

प्लेटलेट्स बढ़ाने में अत्यंत प्रभावकारी हैं होम्योपैथी दवाएं

प्लेटलेट्स हमारे शरीर की ऐसी कोशिकाएं होती हैं जो ब्लड को बहने से रोकती है. शरीर में किसी इंजरी या अन्य कारण से वेसल्स से ब्लीडिंग होने पर प्लेटलेट्स की मदद से ब्लड को रोका जाता है. लो प्लेटलेट्स की संख्या नियमित शरीर के लिए बहुत महत्वपूर्ण होती है. यदि किसी स्थिति में प्लेटलेट्स की संख्या में कमी या वृद्धि होने लगता है तो कई तरह की बीमारियाँ होना शुरू हो जाती हैं. आमतौर प्लेटलेट्स की कमी समस्या का कारण बनती है.

प्लेटलेट्स के कार्य

प्लेटलेट्स डैमेज टिश्यू को ठीक करने के साथ ही ब्लीडिंग होने से रोकता हैं. इस होमियोस्टेसिस के रूप में भी जाना जाता है. प्लेटलेट्स ब्लड में मौजूद एलेमेंट्स होते हैं, जो पानी के समान द्रव और कोशिकाओं से बनी होते हैं. इन सेल्स में ऑक्सीजन को ले जाने वाली रेड ब्लड सेल्स भी होता हैं. प्लेटलेट्स ब्लड में मौजूद माइक्रो पार्टिकल्स होते हैं जिनको मेडिकल चेकअप के दौरान देखा जाता है. शरीर पर चोट लगने के बाद ब्लड में मौजूद प्लेटलेट्स को संकेत मिलना शुरू हो जाता हैं, जिससे वह इंजरी और ब्लीडिंग वाले हिस्से पर पहुंचकर ब्लड को रोकते हैं.

प्लेटलेट्स में कमी के लक्षण

प्लेटलेट्स काउंट में कमी होने पर विभिन्न प्रकार के लक्षण महसूस होते हैं.

- अगर आपके प्लेटलेट्स काउंट में कमी होती है, तो आपको निम्न लक्षण महसूस हो सकते हैं.
- बॉडी पर भूरे, लाल और जामुनी रंग के निशान हो सकता है. इस स्थिति को पुरपुरा भी कहा जाता है.
- लाल व जामुनी रंग के छोटे-छोटे रैश हो सकता है.
- नाक से ब्लीडिंग होना.
- गम से ब्लीडिंग होना.
- लंबे समय तक घावों से खून बहते रहता है.
- पीरियड में अधिक ब्लीडिंग होना.
- मलाशय के माध्यम से ब्लड आना.
- मल में ब्लड आना.
- यूरिन में ब्लड आना.

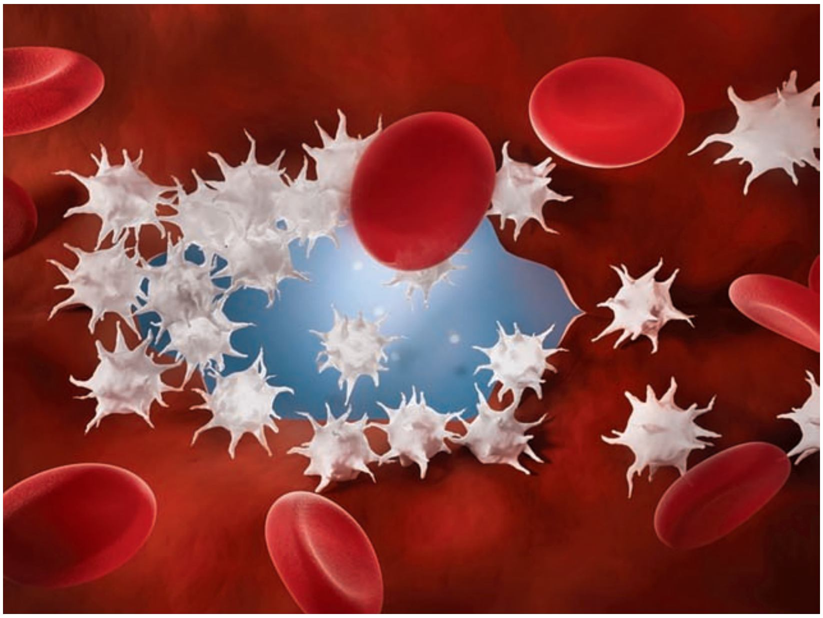

कम हुए प्लेटलेट्स, तेजी से बढ़ाना जरूरी

डेंगू या चिकनगुनिया होने पर तरल पदार्थों का लगातार अधिक से अधिक सेवन करें। इन घातक बीमारियों से बचाव के लिए अपने आसपास मच्छर बिलकुल न पनपने दें और संक्रमण वाले स्थानों पर जाने से बचें। रात में सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें। बीमारियों के लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से सम्पर्क करें। सबसे अहम बात यह है कि दोनों ही रोगों में रोगी के कम हुए प्लेटलेट्स, तेजी से बढ़ाना जरूरी है। इस कार्य में होम्योपैथी दवाएं अत्यंत प्रभावकारी साबित होती हैं।

यह बात देश के जाने-माने होम्योपैथिक चिकित्सक और भारत सरकार के आयुष मंत्रालय सीसीआरएच के वैज्ञानिक सलाहकार मंडल के सदस्य डॉ. ए.के. द्विवेदी ने कही। डेंगू और चिकनगुनिया जैसी मच्छरों के काटने से फैलकर वायरल होने वाली बीमारियों का खतरा बहुत बढ़ जाता है।

बीमारी को खतरनाक स्तर पर न जाने दें

डेंगू होने पर शरीर में तेज बुखार के साथ माँसपेशियों और जोड़ों में तेज दर्द, सिरदर्द तथा छाती, पीठ या पेट पर लाल चकत्ते होने की समस्या हो जाती है। गंभीर स्थिति में प्लेटलेट्स भी कम होने लगते हैं। समय पर इलाज न मिल पर डेंगू खतरनाक रूप भी ले सकता है। चिकनगुनिया होने पर भी डेंगू से मिलते-जुलते लक्षण नजर आ सकते हैं। हालांकि इसमें जोड़ों में होने वाले दर्द की समस्या अधिक होती है।

लगभग 12 दिनों तक रह सकता है चिकनगुनिया बुखार

चिकनगुनिया बुखार लगभग 2 से 12 दिन तक रह सकता है, लेकिन बीमारी बढ़ने पर कई बार रोगी को इससे उबरने में महीनों लग जाते हैं। कई मरीजों को जोड़ों के दर्द की समस्या 3 महीने से 2 साल तक झेलनी पड़ सकती है। उनके शरीर में पानी की कमी हो सकती है। इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन, साँस सम्बन्धी बीमारियाँ आदि भी चिकनगुनिया के प्रभाव से हो सकती हैं। इसलिए इन खतरनाक बीमारियों के लक्षण नजर आते ही उनकी अनदेखी बिल्कुल ना करें और तुरंत अपने चिकित्सक से परामर्श कर समुचित उपचार प्रारंभ कर दें।

ज्यादा बैठे रहने से भी होती हैं ये बीमारियां...

लम्बे समय तक बैठने से भी हमारे शरीर में कुछ ऐसे परिवर्तन होने लगते हैं जो कि हानिकारक होते हैं। भले ही हम इन पर गौर न कर पाते हैं। उदाहरण के लिए अगर हम टीवी के सामने लम्बे समय तक बैठे रहते हैं तो यह भी हानिकारक है और इससे व्यक्ति कई तरह बीमारियों का शिकार हो सकता है।

आमतौर पर हम दफ्तरों में भी करीब 8-10 घंटे तक कम्प्यूटर के सामने बैठे रहते हैं और यह स्थिति भी निरापद नहीं है क्योंकि इस कारण से आपके सिर से लेकर पैर तक बीमारियां अपनी मौजूदगी बना सकती हैं।

हाई ब्लड प्रेशर, कोलेस्ट्रॉल

लम्बे समय तक बैठने से विभिन्न अंगों को नुकसान हो सकता है। लम्बे समय तक बैठे रहने से उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) की समस्या हो सकती है और कोलेस्ट्रॉल बढ़ सकता है।

मांसपेशियों में कमजोरी

आप बैठे रहते हैं तो पीठ और पेट की मांसपेशियां ढीली पड़ने लगती हैं। इसी स्थिति के चलते आपके कूल्हे, पैरों की मांशपेशियां कमजोर पड़ने लगती हैं।

ऑस्टियोपोरोसिस

लम्बे समय तक बैठे रहने से लोगों का वजन भी बढ़ता है और इसके परिणामस्वरूप कूल्हे और इसके नीचे के अंगों की हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। शारीरिक सक्रियता की कमी के कारण ही ऑस्टियोपोरोसिस या अस्थि-सुषिरता जैसी बीमारियां आम होती जा रही हैं।

गर्दन में तनाव

लम्बे समय तक कम्प्यूटर पर बैठने या टाइप करने से गर्दन भी सख्त हो जाती है। इस अस्वाभाविक हालत का परिणाम यह होता है कि गर्दन में तनाव पैदा हो जाती है। इसके कारण कंधों और पीठ में भी दर्द होने लगता है।

बचने के लिए क्या करें?

इन अप्रिय स्थितियों से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं तो इसका जवाब है कि आप हल्का व्यायाम करके ही बहुत हद होने वाले नुकसान को रोक सकते हैं।

- एक्सरसाइज बॉल या बैकलेस स्टूल पर बैठें। इससे आपके सभी मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं।
- आप दिन में एक बार अपने हिप फ्लेक्सर्स को तीन-तीन मिनट के लिए दोनों ओर रखकर बैठें।
- अगर आप टीवी देख रहे हों या अन्य कोई काम कर रहे हों तो थोड़ी देर के लिए आप चलना शुरू कर दें। भले ही चलने की रफ्तार धीमी हो, लेकिन इससे भी आपकी मांसपेशियां सक्रिय होती हैं।
- आप बार-बार खड़े होने और बैठने का अभ्यास करें।
- आप योग मुद्राओं का अभ्यास कर सकते हैं या फिर अपने शरीर को गाय, बिल्ली जैसी मुद्रा में रखें।

पीठ पर बुरा असर

एक जैसी स्थिति में बैठे रहने से रीढ़ की हड्डी की नमनीयता की विशेषता दुष्प्रभावित होती है और इसमें डिस्क क्षतिग्रस्त भी हो सकते हैं। इसलिए सही अवस्था में बैठने के लिए उपाय करने चाहिए।

यदि आप डेंगू के इलाज के बाद भी प्लेटलेट्स की कमी से जूझ रहे हैं। सभी प्रयासों के बावजूद भी रक्त में आपके प्लेटलेट्स नार्मल नहीं आ रहे हैं तो आप डॉ. ए.के. द्विवेदी द्वारा दी जाने वाली होम्योपैथी की 50 मिलिसिमल पोटेंसी की दवाईयों के सहायता से आपके शरीर में प्लेटलेट्स बढ़ाने में सफलता हासिल कर सकते हैं।

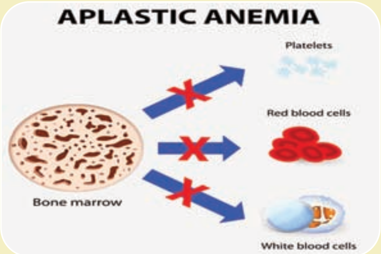

9993190140, 9826042287, 9424083040

एडवांस्ड होम्यो-हेल्थ सेंटर एवं होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्रा.लि.

प्रोस्टेट कैंसर और यूरिन संबंधी परेशानी से मिला आराम

पिता जी के साथ वंदना जी

मैं वंदना मेरे पिताजी मन्नासिंग जी (81) निवासी जबलपुर। पिताजी को 2023 में फोर्थ स्टेज प्रोस्टेट कैंसर से संबंधित परेशानी थी। यूरिन में नली लगी थी। जिन्हें हमनें इंदौर आकर डॉक्टर एके द्विवेदी जी को दिखाया। रिपोर्ट्स देखने के बाद डॉ. द्विवेदी जी ने होम्योपैथिक ट्रीटमेंट और प्राकृतिक चिकित्सा देना शुरू किया। उपचार के 5 दिन में नली निकलवा दी गई। उसके बाद पिताजी को यूरिन संबंधी कोई परेशान नहीं हुई है। पिताजी को स्वस्थ करने के लिए डॉ. द्विवेदी साहब का बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं।

होम्योपैथी के सहयोग से हारा कैंसर, जीता हौसला

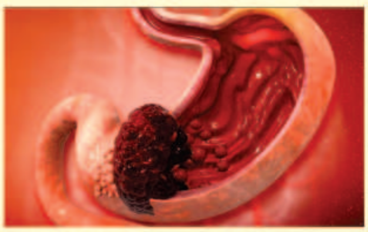

मेरा नाम डॉ. पी.एन. मिश्रा है। मेरे बेटे को 5 वर्ष पहले कैंसर की शिकायत हुई थी, ऑपरेशन हुआ, रेडिएशन हुआ और कीमोथेरेपी हुई। इसी तरह साल 2018 में मेरे पेट में हल्का सा दर्द हुआ और जाँच में कैंसर पाया गया। ऑपरेशन हुआ कीमोथेरेपी हुई क्योंकि कैंसर ऐसे स्थान पर बना हुआ था जहाँ पर रेडिएशन नहीं हो सकता था। मैंने डॉ द्विवेदी सर से होम्योपैथिक दवा ली और हम दोनों पूरी तरह से कैंसर को हरा चुके हैं। अब मैं पूरी तरह स्वस्थ हूँ।

Watch us on YouTube

for Homeopathy Treatment

dr ak dwivedi homeopathy

Cell : 98260 42287

E-mail : drakdindore@gmail.com

एडवांस्ड होम्यो-हेल्थ सेंटर एवं होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्रा.लि. इन्दौर

8/9, मयंक अपार्टमेंट, मनोरमागंज, गीता भवन मंदिर रोड, इन्दौर (म.प्र.)

Mob. 99931-90140, 99931-40840

छू मंतर हो गई बीमारी -संतोष कुमार

पुलिस की नौकरी में होने के नए बहुत चौकन्ना रहना पड़ता है ऐसे में शरीर में इचिंग होना मेरे सामने एक बहुत बड़ा चैलेंज था। हमेशा मेरा ध्यान इसी में लगा रहता था, बहुत परेशान हो गया था मैं। अक्सर लोगों से किसी अच्छे डॉक्टर की जानकारी लेता रहता था जिसके चलते एक दिन मुझे होम्योपैथी डॉक्टर एके द्विवेदी के बारे में पता चला और उनके महज चार माह के इलाज से ही मैं पूरी तरह इस समस्या से बाहर आ गया। हालांकि मुझे इतनी ज्यादा तकलीफ थी कि कभी सोचा नहीं था कि इतनी जल्दी आराम हो जाएगा, परन्तु आज मैं स्वस्थ हूं।

यह बात ट्रैफिक विभाग के रिटायर्ड डीएसपी संतोष कुमार उपाध्याय ने शेयर की है। आगे उन्होंने बताया कि रिटायरमेंट के बाद भी आज मैं बहुत आराम से एक कॉलेज में मैनेजमेंट सम्भाल रहा हूं और इलाज के करीब 8 साल

बाद भी अब मुझे इचिंग नहीं होती है। शुरुआत में मुझे कभी लगता कि डस्ट के कारण एलर्जी हो रही है तो कभी लगता धूप तो कभी ज्यादा तेज ठंड के कारण स्किन में ड्राइनेस के कारण इचिंग हो रही होगी। लेकिन डॉ. ने बताया एलर्जी किसी भी चीज से हो सकती है और इसका कोई भी कारण हो सकता है। उन्होंने पूरी जांच के बाद दवाईयां शुरू की और धीरे धीरे मैं ठीक हो गया।

पूरे शरीर में हो जाते थे लाल चट्टे

कभी भी कही भी किसी भी वक्त मुझे शरीर में लाल लाल चट्टे हो जाते थे इतना ज्यादा परेशान हो गया था कि समझ नहीं आता था कि करूं तो करूं क्या। मैं उस वक्त उज्जैन में पदस्थ था। ड्यूटी के दौरान लगता था कि कोई देख रहा होगा तो क्या सोच रहा होगा। कुछ खास सहयोगियों को तो ये परेशानी पता थी तो उनके सामने ख्यादा बुरा नहीं लगता था। इसके बाद ही मुझे द्विवेदी साहब का पता चला और उन्होंने मुझे 4 माह तक चार टाइम के दवाई के डोज दिए जिससे मुझे काफी राहत मिली। वाकई होम्योपैथी से हर बीमारी का इलाज संभव है।

मौसम बदलते ही शुरू हो जाती थी प्रॉब्लम्स-घनश्याम ठाकुर

कभी किताब के पन्ने पलटने से तो कभी किसी चीज की खुशबू या बदबू से, कभी मौसम बदलने तो कभी न्यूज पेपर खोलते ही और ऐसी हर किसी भी चीज से मुझे एलर्जी हो जाती थी। यह बात करीब 3 साल पहले की है जब मुझे एलर्जी की बहुत परेशानी थी। इसमें डस्ट एलर्जी, मौसम बदलने पर एलर्जी और अन्य से दिक्कत होती थी, कई बार तो नए चीजों को हाथ भी नहीं लगा पाता था कि फिर कही सांस लेने में दिक्कत या खांसी न चलना शुरू हो जाए और बल्कि आंखों में से आंसू भी आने लगते थे, गला खराब हो जाता था। लेकिन अब मैं होम्योपैथी डॉ. एके द्विवेदी के इलाज से पूरी तरह स्वस्थ हूं।

ये अनुभव ज्योतिष घनश्याम ठाकुर के है। वे महादेव तोतला नगर के निवासी है। उन्होंने अपनी बीमारी से लेकर अपने इलाज तक के अनुभव साझा करते हुए बताया कि मेरी समस्या। बहुत सामान्य थी लेकिन मैं इससे बहुत परेशान हो जाता था एक दिन अपने पारिवारिक मित्र होम्यो गुरु डॉ. एके द्विवेदी से ये सब शेयर किया और उन्होंने कहा आपको बढ़िया दवाई देता हूं। इससे आप पूर्ण रूप से ठीक हो जाएंगे। फिर उन्होंने मुझे दवाई देना शुरू कर दिया। उनकी

दवाई से महज 2 से 3 दिन में ही फर्क पड़ने लगा।

अब किसी भी चीज से नहीं होती एलर्जी

घनश्याम ठाकुर ने बताया डॉ. द्विवेदी का इलाज काफी अच्छा है उनकी दवाइयों से बहुत राहत है और अब ना तो डस्ट से एलर्जी होती है और ना ही किसी भी चीज की खुशबू या बदबू से और जब कभी हल्की फुल्की समस्या होने लगती हैं तो मैं तुरंत उनकी दवाइयां ले लेता हूं। द्विवेदी जी की दवाई से काफी फायदा होता है और सबसे बड़ी बात ये है कि उनका किसी भी बीमारी को खत्म करने का पॉजिटिव तरीका वो किसी भी मरीज के लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है।

हमेशा अपने पास ही रखती हूं दवाइयां

मिसेज सविता ठाकुर को भी अक्सर हाइपर एसिडिटी, गला खराब हो जाना और अस्थमा की भी शिकायत रहती थी और बल्कि मौसम की एलर्जी की भी परेशानी थी, जैसे बाहर बादल हो रहे तो सांस लेने में दिक्कत होना, धूल से, धुएं से, पटाखों से, सीमेंट से, खुशबू से, अगरबत्ती से, परफ्यूम हर चीज से दिक्कत थी लेकिन उन्होंने भी डॉ. द्विवेदी का इलाज लिया और आज वे पूरी तरह स्वस्थ है।

उनका कहना हैं डॉ. द्विवेदी जी की एक माह की ही दवाई ली तो पूरी तरह असर हो गया था लेकिन फिर भी आज भी मैं हमेशा उनकी दवाइयां अपने पास रखती हूं जब कभी मौसम बदलता है मैं पहले ही उनकी दवाइयां ले लेती हूं जिससे परेशानी नहीं होती।

नींबू पानी पीने के फायदे

नींबू, एक ऐसा फल है जो भारतीय रसोई में बहुतायत से उपयोग किया जाता है। इसका ताजगी भरा स्वाद और खट्टापन न केवल खाने का स्वाद बढ़ाता है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी अत्यधिक लाभकारी है।

हमें पता है कि नींबू का बहुत सारे चीज़ों में इस्तेमाल हो सकता है और इसके कई सारे लाभ भी हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि नींबू पानी पीने के भी निम्नलिखित फायदे हैं? यदि आप रोज़ नींबू पानी पीते हैं, तो यह कई बीमारियों से बचा सकता है।

आइए जानते हैं, नींबू पानी पीने के फायदे, नींबू पानी पीने से कितनी बीमारियाँ कम हो सकती हैं और यह कब और कैसे पीना चाहिए। इन सभी प्रश्नों के उत्तर हम आपको इस ब्लॉग के माध्यम से देने की कोशिश करेंगे।

नींबू पानी पीने के फायदे

नींबू पानी एक साधारण और प्रभावशाली पेय है जो आपके स्वास्थ्य को कई तरीकों से लाभ पहुंचा सकता है। इसे अपने दैनिक आहार में शामिल करके आप अपने शरीर को ताजगी और ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं। आइए जानते हैं नींबू पानी पीने के कुछ प्रमुख फायदे-

पाचन में सुधार

नींबू पानी पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है। इसमें मौजूद विटामिन C और एंटीऑक्सीडेंट्स पेट के अम्लीयता को संतुलित करने में सहायक होते हैं, जिससे पेट साफ रहता है और पाचन तंत्र सही ढंग से काम करता है।

वजन घटाने में सहायक

नींबू पानी का नियमित सेवन वजन घटाने में मदद कर सकता है। यह मेटाबॉलिज़्म को तेज करता है और शरीर से विषैले पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है। इसके अलावा, नींबू पानी पीने से तृप्ति महसूस होती है, जिससे ओवरईटिंग की संभावना कम होती है।

इम्यून सिस्टम को बनाए मजबूत

नींबू पानी का सेवन इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाता है। विटामिन C और अन्य पोषक तत्व प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करते हैं, जिससे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ती है।

डिटॉक्सिफिकेशन

नींबू पानी शरीर को डिटॉक्सिफाई करने में सहायक होता है। यह जिगर को स्वच्छ करता है और शरीर से विषाक्त पदार्थों को बाहर निकालने में मदद करता है, जिससे आप अधिक ऊर्जावान और स्वस्थ महसूस करते हैं।

हृदय स्वास्थ्य के लिए लाभकारी

नींबू पानी हृदय स्वास्थ्य को भी लाभ पहुंचा सकता है। इसमें मौजूद पोटेशियम हृदय की धड़कनों को नियमित करने में मदद करता है और रक्तदाब को नियंत्रित रखने में सहायक होता है।

नींबू पानी पीने से कितनी बीमारियाँ कम हो सकती हैं ?

नींबू पानी, जिसे अक्सर स्वास्थ्यवर्धक पेय के रूप में देखा जाता है, वास्तव में कई बीमारियों से बचाव और स्वास्थ्य लाभ प्रदान कर सकता है। इसके नियमित सेवन से विभिन्न शारीरिक समस्याओं में सुधार हो सकता है। आइए जानते हैं कि नींबू पानी पीने से किस प्रकार की बीमारियाँ कम हो सकती हैं-

त्वचा की समस्याएँ- नींबू पानी में विटामिन C होता है, जो त्वचा को चमकदार बनाता है और फ्री रैडिकल्स से सुरक्षा प्रदान करता है। यह एक्ने और डलनेस जैसी त्वचा की समस्याओं को कम कर सकता है।

हृदय स्वास्थ्य- नींबू पानी में एंटीऑक्सीडेंट्स और पोटैशियम होता है, जो हृदय स्वास्थ्य को सुधारता है। यह रक्तचाप को नियंत्रित करने में भी मदद कर सकता है।

गठिया और जोड़ों का दर्द- नींबू पानी में मौजूद एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण जोड़ों के दर्द और गठिया से राहत प्रदान कर सकते हैं।

नींबू पानी के सेवन से स्वास्थ्य में लाभ प्राप्त करने के लिए इसे नियमित रूप से खाली पेट पीना अधिक फायदेमंद होता है। हालांकि, यह ध्यान रखना आवश्यक है कि किसी भी स्वास्थ्य समस्या के लिए नींबू पानी एकमात्र उपचार नहीं है, और गंभीर समस्याओं के लिए डॉक्टर की सलाह लेना हमेशा जरूरी है।

नींबू पानी किस समय पीना चाहिए?

नींबू पानी न केवल आपकी सुबह को ऊर्जा और ताजगी से भर देता है, बल्कि दिनभर के लिए आपके स्वास्थ्य को भी ऊर्जा प्रदान करता है। लेकिन, नींबू पानी का सही समय पर सेवन करना इसके लाभ को अधिक कर सकता है।

सुबह खाली पेट- सुबह उठते ही खाली पेट नींबू पानी पीना सबसे फायदेमंद होता है। यह आपके पाचन तंत्र को सक्रिय करता है, शरीर को डिटॉक्सिफाई करता है और दिन की शुरुआत को ऊर्जा से भर देता है।

भोजन के बाद- भारी और मसालेदार भोजन के बाद नींबू पानी पीने से पाचन में मदद मिलती है और शरीर को आराम मिलता है। यह पेट की समस्याओं से राहत प्रदान करता है।

वर्कआउट से पहले- वर्कआउट या एक्सरसाइज से पहले नींबू पानी पीने से शरीर हाइड्रेटेड रहता है और वर्कआउट के दौरान अधिक ऊर्जा प्राप्त होती है।

दोपहर के समय- दिन के मध्य में थकावट महसूस होने पर एक गिलास नींबू पानी पीने से ताजगी मिलती है और ऊर्जा में सुधार होता है।

तनाव और अवसाद के उपचार के लिए होम्योपैथी

होम्योपैथी चिकित्सा की एक ऐसी पद्धति है जो रोग को दबाने की बजाए शरीर को इस कदर तैयार करती है जिससे कि शरीर खुद उस रोग को जड़ से बाहर निकाल फेंके। होम्योपैथी बीमार व्यक्ति के शरीर और मन दोनों का उपचार करती है।

होम्योपैथिक उपचार कारगर और सुरक्षित चिकित्सा प्रणाली है जो शरीर और मन दोनों को स्वस्थ करती है। बहुत हीं तेज एंटीडीप्रेसेंट्स या ट्रंक्वीलाइजर्स की तरह होम्योपैथिक दवाओं के साइड इफेक्ट नहीं होते हैं और आदमी इस का आदी भी नहीं होता। पारंपरिक दवाओं की अपेक्षा होम्योपैथिक उपचार अवसाद, तनाव और अन्य मन तथा भावनात्मक समस्याओं को ठीक करने में बहुत प्रभावी होता है। एक सक्षम होम्योपैथिक चिकित्सक आमतौर पर तनाव या अवसाद के इलाज के लिए आप के लिए उपयुक्त आहार एवं औषधि निर्धारित करतें हैं।

अवसाद के लिए होम्योपैथिक उपचार

ऐनाकारडियम, आरसेनिक-अल्ब , औरम -मेट, ईगनेशिया, एसिड -फॉस, पल्सेटिला, नेट्रम-म्यूर, सीपिया, एन्टिम-क्रूड, नाजा, नक्स-वोमिका, सोराइनम इत्यादि। अगर दो लोगों को अवसाद है तो कोई जरूरी नहीं है कि दोनों को एक हीं दवा चलेगी क्योंकि दोनों के लक्षणों में भिन्नता आ सकती है।

तनाव के लिए होम्योपैथी उपचार

तनाव के लिए होम्योपैथी की कुछ आम औषधियां एकोनाईट, आरसेनिकम, और फॉस्फोरस होती हैं। ये दवाईयाँ हर 1 - 4 घंटे के भीतर तब तक दी जाती हैं जब तक लक्षण पूरी तरह से मुक्त न हो जायें।

होम्योपैथी उपचार में सावधानी

होम्योपैथी औषधियां तनाव एवं अवसाद को ठीक करने में बहुत हीं कारगर सिद्ध होती हैं। लेकिन अगर आपकी समस्या काफी गंभीर हो तो खुद इलाज करने की बजाय किसी अच्छे होम्योपैथी के चिकित्सक से मिलें।

पढ़ें अगले अंक में

मई - 2025

क्रॉनिक फटीग सिंड्रोम विशेषांक

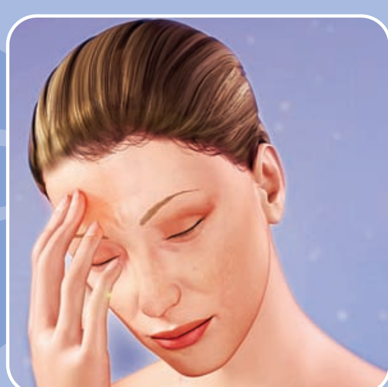

सेहत एवं सूरत

राष्ट्रीय मासिक स्वास्थ्य पत्रिका

पत्रिका नहीं संपूर्ण अभियान, जो रखेगी पूरे परिवार का ध्यान...

घुटनों के सालों पुराने दर्द से मिला छुटकारा - प्रमिला चौरे

दोनों घुटनों के दर्द से मैं बहुत परेशान रहती थी। न तो सीढ़ियां चढ़ना उतरना हो पाता था और न ही ज्यादा देर तक चल पाती थी ऐसा लगता था बस एक जगह बैठी रहूं। पैरों में बहुत से तेल की मालिश भी किया करती थी जो कोई कुछ भी इलाज बताता था सब किया लेकिन आराम नहीं हुआ। नींद में भी घुटनों में दर्द के के चटके चलते थे लेकिन दर्द से कहारने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं था।

यह बात पुनासा निवासी प्रमिला चौरे ने शेयर की। उन्होंने कहा मेरी उम्र फिलहाल 60 वर्ष है और जब मुझे घुटनों में दर्द था तब करीब 48 या 50 की उम्र होगी और उसके भी कई साल

पहले से मुझे घुटनों में भयंकर दर्द था इसलिए बहुत से इलाज के बाद भी आराम नहीं हुआ तो मेरा संपर्क होम्योपैथी के डॉक्टर ए. के. द्विवेदी के बारे में पता चला और मैंने तुरंत उनसे संपर्क किया। इसके बाद इलाज शुरू हुआ और कुछ ही माह में मुझे आराम भी होने लगा और करीब सालभर तक मैंने दवाई ली ताकि घुटनों की तकलीफ जड़ से खत्म हो जाए।

पाइल्स में भी हो गया आराम

प्रमिला चौरे ने बताया कि घुटनों की समस्या के दौरान ही मैं पाइल्स के कारण भी परेशान रहती थी लेकिन डॉक्टर साहब को बताने में झिझक होने के कारण कई दिनों तक बता नहीं पाई और जब बताया तो उन्होंने इलाज शुरू किया। मैंने उनकी बताया कि दोनों बच्चों की डिलीवरी के बाद मुझे पाइल्स की समस्या हो गई थी तब उन्होंने यही कहा था कि सब ठीक हो जाएगा और वाकई यही हुआ आज सालों गुजर गए लेकिन ना तो मुझे पाइल्स की समस्या हुई और ना ही घुटनों में दर्द हुआ, बल्कि अब मैं चलना फिरना उतना बैठना सब कर लेती हूं और बल्कि वॉक पर भी जाती हूं।

दोनों बेटियों को मिला नया जीवन - राजश्री अग्रवाल

मेरी बेटी खुशी को 2 साल की उम्र से अस्थमा की शिकायत थी। पहले उसे आराम नहीं मिल रहा था। हर 15 दिन में वह बीमार हो जाती। उसे पंप देना और इंजेक्शन लगाना पड़ता था, जिससे उसका शरीर फूल रहा था। उसे उठाने में दिक्कत होती थी। वह रोती ही रहती थी। मेरी मासूम बेटी उसका रोना नहीं देखा जाता था लगता था कभी अच्छी भी हो पाएगी कि नहीं? 2 साल उम्र में उसका वजन 5 साल हो गया। पैर मोटे हो गए। बैठ नहीं पाती थी। बैठाओ तो लुढ़क जाती थी। फिर एक दिन मुझे अपनी बहन से होम्योपैथी डॉ. एके द्विवेदी के बारे में पता चला। गीता भवन पर उनके क्लीनिक पर जाकर इलाज शुरू किया और अब मेरी बेटी की उम्र 22 साल है और वह पूरी तरह स्वस्थ है। अस्थमा जड़ सहित खत्म हो चुका है।

यह कहना है इंदौर के पल्हर नगर निवासी राजश्री अग्रवाल का। उन्होंने कहा बेटी की बीमारी के कारण में काफी तनाव में रहने लगी। वह आइसक्रीम और ठंडी चीजें नहीं खा पाती। काफी परहेज करना पढ़ता था। डॉ. द्विवेदी ने बताया कि यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है वो ठीक हो जाएगी। उन्होंने एक साल में यह बीमारी ठीक हो जाने का भरोसा दिलाया लेकिन सिर्फ 6 माह की दवाई से ही वो पूरी तरह से ठीक हो गई और अब वह सब कुछ खा पी सकती है पहले तो ठंडी जगह पर वो रह ही नहीं पाती थी लेकिन अब वो एसी के बिना नहीं रह नहीं रह पाती है।

किसी करिश्में से कम नहीं....

राजश्री ने बताया कुछ माह बाद हमारी छोटी बेटी माही को टीवी की बीमारी हो गई। तब उसकी उम्र 8 वर्ष थी। उसे भी हमने द्विवेदी सर को ही दिखाया। उसे बहुत ज्यादा सर्दी, खांसी रहती थी। सर ने उसके टेस्ट करवाएं और कहा टीवी कोई बड़ी बीमारी नहीं हो इसका इलाज संभव है और केवल 6 महीने के इलाज के बाद वह पूरी तरह ठीक हो गई। हमारी दोनों बेटियों के लिए डॉ द्विवेदी का इलाज किसी करिश्में की तरह रहा।

सौंदर्य बढ़ाइये फूलों से

प्रकृति ने हमें अनमोल खजाना दिया है। हम इनका उपयोग कर शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ व सुंदर रह सकते हैं। फूलों की तरह खिली-खिली आकर्षक, कोमल व स्निग्ध बने रहने के लिए हर हफ्ते लीजिए फ्लॉवर बाथ। हम आपको कुछ ऐसे फूलों की गुणवत्ता के बारे में बता रहे हैं, जो अधिकांश आपको अपने घर में ही या आसपास ही मिल जाएंगे। तो इन फूलों को आजमाइए और अपना सौंदर्य बढ़ाइए।

गेंदे के फूल

दो लीटर पानी को कांच की बरनी में डालिए। उसमें आठ-दस देशी गेंदे के फूलों की पंखुड़ियां तोड़कर डाल दीजिए और इसे तेज धूप में रख दीजिए। दूसरे दिन डाली हुई पंखुड़ियां निकाल लीजिए और उतनी ही ताजी पंखुड़ियां डालकर धूप में रख दीजिए। इस तरह कम से कम पंद्रह दिन इस क्रम को दोहराइए। फिर इस पानी को छानकर फ्रिज में रख लीजिए। इस पानी को रोज दिन में एक बार अपने चेहरे पर रुई की सहायता से लगाइए। लगातार इस पानी को लगाने से ओपन पोर्स की समस्या से छुटकारा मिलेगा, साथ ही साथ चेहरे की झांइयां व दाग-धब्बे भी कम होंगे।

चमेली के फूल

ये त्वचा व बालों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। रात को पानी में इन्हें भिगो दीजिए, सुबह मिक्सर में पीस लीजिए व इसमें दो चम्मच गुलाब जल डाल दीजिए। इसे बालों में लगाने से चमक आती है व चेहरे पर लगाने से त्वचा में निखार आता है।

गुलाब के फूल

जब भी आप अपनी त्वचा पर गुलाब के फूलों का उपयोग करें तो इस बात का ध्यान रखें कि गुलाब देशी हो। त्वचा पर गुलाबी रंग के देशी गुलाब का उपयोग करेंगी तो आपको परिणाम अच्छे मिलेंगे। दो-तीन लाल देशी गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां रात को मलाई निकले दूध में भिगो दें। सुबह उसमें एक चुटकी नमक डालकर बारीक पेस्ट बना लें। इसमें थोड़ा-सा चंदन पाउडर या दो बूंद चंदन का तेल डालकर चेहरे व गर्दन पर लगायें। आधे घंटे बाद पानी से चेहरा धो लें। इसे हफ्ते में दो-तीन बार करें। आपका चेहरा खिल उठेगा।

कैलेंडुला के फूल

ये फूल मौसमी होते हैं व केवल ठंड में ही फूलते हैं। ठंड में इन फूलों को सुखाकर एयर टाइट डिब्बे में बंद करके रख लीजिए। ये साल भर तक खराब नहीं होंगे। जब भी आपको चेहरे पर फुंसियां, मुंहासे, बालों में डेंड्रफ आदि हों तो इन फूलों को पानी में भिगोकर बारीक पेस्ट बनाकर बालों व त्वचा पर लगा लीजिए, फायदा होगा।

बड़ी तरावट वाली ककड़ी

ककड़ी ग्रीष्मकाल में बहुतायत में मिलने वाली एक प्रमुख वनस्पति है। यह प्रायः फाल्गुन या चैत्र मास में बोई जाती है। इसकी बेल खूब लम्बी फैलती है। ककड़ी के फूल पीले रंग के होते हैं। कच्ची अवस्था में ककड़ी खूब नरम-हरे रंग की तथा रोएँदार होती है। बढ़ने पर श्वेत व पीली हो जाती है तथा पकने पर विशेष लालिमा युक्त पीली पड़ जाती है। कहीं-कहीं यह ककड़ी वर्षा ऋतु में भी होती है, किन्तु वर्षा व शरद ऋतु की रोगकारक मानी जाती है, कहा भी है- 'सर्वाः कर्कटिका वर्षा शरदि जाता न हिताः' (नि. रत्नाकर)। ग्रीष्म व हेमन्त में होने वाली ककड़ी विशेष रुचिकारक, पित्तनाशक व हितकारी होती है।

सौंदर्य सुझाव

- चेहरे की सफ़ाई और चमक बढ़ाने के लिए ककड़ी के दो चम्मच रस में चार बूँद नीबू का रस व चुटकी भर पिसी हुई हल्दी को मिला कर बनाए गए लेप को चेहरे और गर्दन पर लगाने से चेहरे की चिकनाई दाग धब्बे और रूखापन सभी दूर हो जाते हैं।
- ककड़ी का रस प्रतिदिन पीने से चेहरे से मुहाँसे, कील, दाग और धब्बे धीरे-धीरे मिट जाते हैं। प्रतिदिन सुबह खाली पेट ककड़ी का जूस पिया जाए तो चेहरे का सौंदर्य बढ़ जाता है।
- ककड़ी के रस का लगातार सेवन करते रहने से बालों का असमय पकना और झड़ना बिल्कुल बंद हो जाता है। कच्ची ककड़ी के रस को नहाने से पहले बालों पर लगाया जाए और कुछ देर में धो लिया जाए तो बाल स्वस्थ हो जाते हैं, जड़ें मजबूत होती हैं और इनका झड़ने का सिलसिला बंद हो जाता है।
- ककड़ी, पालक और गाजर की समान मात्रा का जूस तैयार कर पीने से बालों का तेजी से बढना प्रारंभ हो जाता है।

औषधीय उपयोग

- कच्ची ककड़ी में आयोडीन होता है, अतः यह घेंघा रोग पीड़ित व्यक्ति के लिए लाभदायक होती है। इसको कुचलकर रस निकालकर पीने से यह अधिक लाभ करती है। इसके रस से हाथ मुँह धोने से फटते नहीं हैं। मुख पर सौंदर्य आता है। ककड़ी खाकर तुरन्त भोजन नहीं करें, जब ककड़ी पच जाए तभी भोजन करना चाहिए। ककड़ी कतर कर खिलाने से शराब का नशा उतर जाता है। ककड़ी काट कर सूँघने से बेहोशी में राहत मिलती है।
- वजन कम करने के इच्छुक व्यक्ति इसे अधिक मात्रा में खा सकते हैं ककड़ी सामान्यतः कच्ची खाई जाती है इसे हमेशा छिलका बिना उतारे खाना चाहिए।
- ककड़ी में पोटोशियम तत्व मिलता है। अतः इसका रस उच्च तथा निम्न रक्तचाप में लाभदायक है। वातरोग में ककड़ी के साथ गाजर का रस मिलाकर पीने से लाभ मिलता है। गर्मियों में ककड़ी के बीजों को ठण्डाई के साथ घोंटकर पीने से गरमी के विकारों को दूर करने में सहायता मिलती है।
- गर्भिणी के उदर शूल- ककड़ी के जड़ 1 तोला को 1 पाव दूध व 1 पाव जल के मिश्रण में कुचल कर मिला दें, फिर मंदाग्नि पर पकाएँ दुग्ध मात्र रहने पर सुखोष्ण पिलाने से लाभ होता है।

बिना शर्त करें बच्चों से प्यार

पूरे घर में शांति का माहौल है। आपके बच्चे कालेज, जॉब्स या विवाह कर चुके हैं। आप आशा करते हैं कि आपके बच्चे खुश होंगे, वे अच्छा कर रहे होंगे और सही राह पर चल रहे होंगे। फिर भी आप बीते समय के माता-पिता नहीं होंगे, पेरैंटहुड से आप कभी रिटायर नहीं होते। पैरेंटहुड जीवन भर का काम है, इसमें कोई पैंशन नहीं होती। जब आपके बच्चे 40 वर्ष के हो जाते हैं और आगे उनके भी बच्चे हो जाते हैं तब भी आपके बच्चे आपकी मृत्यु तक आपके लिए 18 वर्ष के ही रहते हैं। उन्हें हमेशा आपकी स्वीकृति तथा हमदर्दी की जरूरत रहेगी।

बदलती भूमिकाएं

परिवर्तन जीवन का सार है। आप अपनी जॉब पर सर्वाधिक जूनियर से लेकर कंसल्टैंट तक अपनी भूमिका बदल चुके हैं। आपके जीवन साथी के साथ आपका रिश्ता विकसित, परिवर्तित होता है और आगे बढ़ता है इसलिए भी आपके बच्चों के साथ आपका रिश्ता तब उतार-चढ़ावों से गुजरता है जैसे-जैसे वे कानूनी तौर पर वयस्क होते जाते हैं। बिग बॉस होने के कई वर्ष बाद बच्चों के साथ एक वयस्क रिश्ता रखना मुश्किल होता है।

पीछे की ओर कदम

आपके पास अपने बच्चे के पथ को आलोकित करने वाली मार्गदर्शक रोशनी बनने के लिए 21 से अधिक वर्ष थे। यदि उन्होंने आपके मूल्य-मान्यताओं को नहीं अपनाया है तो अभी से आपको उन्हें बताना होगा कि क्या करना है। आप उनके विकास के वर्षों में उनके रोल मॉडल रहे हैं। अब वक्त उनके पंख फैलाने का, उनकी जिंदगी में किताबें, अनुभव तथा अन्य लोगों को शामिल करने का है। वे क्या सीखते हैं, कैसे

सीखते हैं, कहां से सीखते हैं और किसके साथ सीखते हैं, इसका चुनाव करने के लिए आपको उन्हें उनके पैरों पर खड़े होने देना चाहिए। आपने उन्हें जो सिखाया है उसे व्यवहार में लाने को कहें। यदि आप उनकी ई-मेल्स या फेसबुक अकाऊंट पर नजर रखते हैं, उनकी लेट नाइट पार्टियों के निमंत्रणों और दोस्तों को बहुत निर्दयता से नकार देते हैं, तो इसका अर्थ यह है कि आप उन्हें बता रहे हैं कि वे अपनी खुद की जिंदगी नहीं चला सकते।

बच्चों से अपेक्षा न करें

जब आप अपने बच्चों से सहायता की अपेक्षा करते हैं तो या तो आप अपने बच्चों से झूठ बोल रहे होते हैं या फिर आप उन्हें भावनात्मक तौर पर ब्लैकमेल कर रहे होते हैं। इस प्रकार वे दोषी महसूस करते हैं। यह एक ऐसी बात है जो आपको बच्चे के साथ नहीं करनी चाहिए। जैसे-जैसे वे बड़े होते जाते हैं वे बड़ी चीजों के लिए आपकी जरूरत महसूस करेंगे। आपको इस बात पर गर्व होना चाहिए कि संकट के समय आप अपने बच्चे के लिए पहले व्यक्ति हैं जिन्हें वह सहायता के लिए पुकारता है। बच्चों की सहायता करने वाला बनने से भावनात्मक संतोष मिलता है। इसके साथ ही प्यारा, स्वतंत्र तथा जिम्मेदार बच्चा बनाने की प्राप्ति की भावना भी आपके मन में जगती है।

निर्णय लेने में सहायता करें

यदि आपसे किसी बात पर आपका मत पूछा जाये, चाहे यह जीवनसाथी के बारे में हो या कॉलेज के किसी कोर्स के बारे में, अपना मत अवश्य दें। उन्हें प्रवचन न दें और न ही उनका मजाक उड़ाएं। आपके बच्चे को इस बात का विश्वास होना चाहिए कि एक संवेदनशील उत्तर के लिए वह आप पर निर्भर कर सकता है।

उनके लिए हमेशा मौजूद रहें

जब आपके बच्चे छोटे थे तो जिस प्रकार आप उन्हें चूमते या दुलारते थे, उस प्यार का प्रदर्शन करना कभी भी बंद न करें। आप हमेशा उनके कंधों पर बांहें रख सकते हैं, उन्हें गले लगा सकते हैं और साधारण शब्दों में उन्हें आई लव यू कह सकते हैं। उनके साथ बिना शर्त प्यार करें। किसी भी प्रकार की उपलब्धि हासिल करने पर अपने बच्चों का स्वागत करें।

संपूर्ण सोडानी डायग्नोस्टिक क्लिनिक
(A unit of Sodani Hospitals and Diagnostics Pvt. Ltd.)
31 वर्षों का विश्वास
9617770150 24x7 हेल्पलाइन
• टेस्ट की जानकारी
• अपॉइंटमेंट्स
• रिपोर्ट प्राप्ति
स्कैन करें!!
961 777 0150
0731 4766222
एलजी-1, मोरया सेंटर, 16/1 रेस कोर्स रोड, इंदौर (म.प्र.)
sodani@sampurnadiagnostics.com
www.sampurnadiagnostics.com sampurnalab
घर या ऑफिस से ब्लड सैंपल लेने हेतु संपर्क करें

> दुनिया में कई तरह के लोग होते हैं, जिन्हें कई तरह की अजीबोगरीब बीमारियां रहती हैं. कुछ बीमारी ऐसी सामने आ जाती है जो मेडिकल साइंस को भी हैरान कर देती है. इसी तरह की एक बीमारी हीमैटोहाइड्रोसिस है जिसका इलाज होम्योपैथी से किया गया।

डॉ. ए.के द्विवेदी
डायरेक्टर एवं सीईओ
एडवांस्ड होम्यो हेल्थ सेंटर
एवं होम्योपैथिक मेडिकल
रिसर्च प्राइवेट लिमिटेड

शरीर से पसीने की जगह निकलता है खून... एक अजीबोगरीब और दुर्लभ बीमारी जिसका करोड़ों लोगों ने नाम तक नहीं सुना

हीमैटोहाइड्रोसिस बीमारी पर होम्योपैथी चिकित्सा से पाई जीत

पीपुल्स संवाददाता • इंदौर

शुगर और कैंसर जैसी कई खतरनाक और जानलेवा बीमारियों से न जाने कितने लोग अपनी जान गंवा बैठे हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक बीमारी ऐसी भी है जिसमें शरीर से पसीने की जगह खून निकलता है। जी हां, इंदौर की 17 वर्षीय एक लड़की, जो दुर्लभ बीमारी हीमैटोहाइड्रोसिस (खूनी पसीना) से पीड़ित थी। एक अन्य मामले में एक किशोर को भी इसी बीमारी से राहत मिली है। इस दुर्लभ बीमारी में पसीने के रूप में खून का रिसाव होता है, जो कि मरीज के लिए कष्टप्रद स्थिति है। करोड़ों लोगों में से कोई एक इस बीमारी से पीड़ित होता है।

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट से पहले

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के बाद

अब ये पूरी तरह स्वस्थ हैं।

इस जटिल बीमारी को लेकर अन्य चिकित्सकों ने इलाज से हाथ खड़े कर दिए, तब होम्योपैथिक विशेषज्ञ डॉ. एके द्विवेदी ने होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से इसका सफल इलाज किया। कम खर्च में ही इस दुर्लभ बीमारी से छुटकारा दिलाने के बाद, उनकी इस सफलता को रिसर्च जर्नल में प्रकाशित किया गया है।

बीमारी से झारखंड के बच्चे को भी मिला जीवनदान- इसी बीमारी से पीड़ित झारखंड के एक बच्चे ने भी 10 माह की होम्योपैथिक चिकित्सा से पूरी तरह लाभ प्राप्त किया। बच्चे के पिता के अनुसार पिछले 6 महीनों से उसमें कोई रक्तस्राव नहीं हुआ, और अब वह हॉस्टल में रहकर अपनी पढ़ाई भी सफलता से जारी रखे हुए हैं। पहले परिवारजन इस अनोखी बीमारी से घबराए हुए थे और बच्चे के भविष्य को लेकर चिंतित थे, लेकिन डॉ. द्विवेदी की होम्योपैथी चिकित्सा ने उनकी आशाओं को एक नई रोशनी दी।

इलाज के बाद देशभर से आने लगे बीमारी से पीड़ित मरीज- डॉ. एके द्विवेदी द्वारा किए गए इस सफल इलाज के बाद, अब पूरे देश से हीमैटोहाइड्रोसिस से पीड़ित मरीज उनके पास इलाज के लिए आ रहे हैं। यह होम्योपैथी चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो मेडिकल साइंस को एक नई दिशा प्रदान कर रही है।

दुर्लभ बीमारी के उपचार को अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च जनरल में मिली जगह

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के पहले

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के बाद

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के पहले

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के बाद

युवती में पसीने के जगह निकलता था खून...

होम्योपैथी इलाज से हुआ हीमैटोहाइड्रोसिस का इलाज

हीमैटोहाइड्रोसिस पर होम्योपैथी चिकित्सा की जीत

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के पहले

होम्योपैथिक ट्रीटमेंट के बाद

इंदौर. शहर की 17 वर्षीय एक लड़की, जो दुर्लभ बीमारी हीमैटोहाइड्रोसिस (खूनी पसीना) से पीड़ित थी, अब पूरी तरह स्वस्थ है. यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें पसीने की जगह खून निकलता है. जब अन्य चिकित्सकों ने इस जटिल बीमारी के इलाज से हाथ खड़े कर दिए, तब होम्योपैथिक विशेषज्ञ डॉ. एके द्विवेदी ने होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से लड़की का सफल इलाज किया. कम खर्च में ही इस दुर्लभ बीमारी से छुटकारा दिलाने के बाद, उनकी इस सफलता को रिसर्च जर्नल में प्रकाशित किया गया है.

झारखंड के बच्चे को भी मिला जीवनदान- इसी बीमारी से पीड़ित झारखंड के एक बच्चे ने भी 10 माह की होम्योपैथिक चिकित्सा से पूरी तरह लाभ प्राप्त किया. बच्चे के पिता के अनुसार पिछले 6 महीनों से उसमें कोई रक्तस्राव नहीं हुआ, और अब वह हॉस्टल में रहकर अपनी पढ़ाई भी सफलता से जारी रखे हुए हैं. पहले परिवारजन इस अनोखी बीमारी से घबराए हुए थे और बच्चे के भविष्य को लेकर चिंतित थे, लेकिन डॉ. द्विवेदी की होम्योपैथी चिकित्सा ने उनकी आशाओं को एक नई रोशनी दी.

माता-पिता ने बताया भगवान का अंश

इलाज के बाद बच्चे के माता-पिता ने आभार व्यक्त करते हुए कहा डॉ. द्विवेदी केवल एक चिकित्सक नहीं, बल्कि भगवान का अंश हैं. उनका यह उपकार हम जीवनभर याद रखेंगे. डॉ. द्विवेदी द्वारा किए गए इस सफल इलाज के बाद, अब पूरे देश से पीड़ित हीमैटोहाइड्रोसिस से पीड़ित मरीज उनके पास इलाज के लिए आ रहे हैं. यह होम्योपैथी चिकित्सा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जो मेडिकल साइंस को एक नई दिशा प्रदान कर रही

रेयर बीमारी के उपचार को रिसर्च जर्नल में मिली जगह

हीमैटोहाइड्रोसिस (खुनी पसीना) बीमारी पर होम्योपैथी चिकित्सा की जीत

RNI No. MPHIN/2011/40959 प्रत्येक माह की 6 तारीख को प्रकाशित होकर 10 तारीख को डाक प्रेषण की जाती है। डाक पंजीयन क्रमांक MP/IDC/1395/2024-2026

अप्लास्टिक एनीमिया की समस्या में मिला आराम

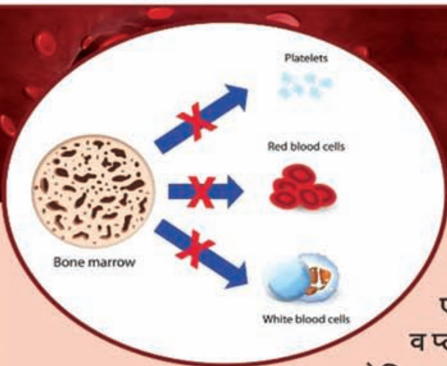

मैं संदीप मंडल, निवासी पश्चिम बंगाल। मेरे जीजाजी दीपांकर वैद्य को 2016 में अप्लास्टिक एनीमिया बीमारी हो गई थी। प्रतिदिन 2 युनिट ब्लड व प्लाज्मा लगवाना पड़ता था। हर जगह इलाज कराया लेकिन डॉक्टर्स ने बोनमैरो ट्रांसप्लांट कराने का बोला। यूट्यूब के माध्यम से डॉ. एके द्विवेदी जी के बारे में जानकारी मिली। जिन्हें रिपोर्ट दिखाकर होम्योपैथिक ट्रीटमेंट शुरू करवाया। बताए अनुसार खान-पान का सेवन किया। कुछ समय में जीजाजी को आराम मिलने लगा। लगभग एक साल बाद में पूरी तरह स्वस्थ है और किसी भी प्रकार की कोई दवा नहीं ले रहे हैं। डॉ. द्विवेदी सर का धन्यवाद देता हूं।

सालों के कमर दर्द की तकलीफ में हुआ आराम

मैं नईमुद्दीन, निवासी इंदौर। मुझे वर्ष 2015 में कमर में तकलीफ हुई थी जिसमें असहनीय दर्द होता था। इंदौर में कई चिकित्सकों को दिखाया लेकिन कहीं से आराम नहीं मिला। फिर डॉ. एके द्विवेदी जी के बारे में मेरे मित्र एमए पठान ने बताया। समय लेकर पहुंचा और अपनी रिपोर्ट और परेशानी बताई। जिस पर होम्योपैथी चिकित्सा प्रारंभ की। कुछ ही दिनों में मुझे आराम लगा और अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं।

Watch us on YouTube

for Homeopathy Treatment

dr ak dwivedi homeopathy

Cell : 98260 42287

E-mail : drakdindore@gmail.com

एडवांस्ड होम्यो-हेल्थ सेंटर एवं होम्योपैथिक मेडिकल रिसर्च प्रा.लि. इन्दौर

8/9, मयंक अपार्टमेंट, मनोरमागंज, गीता भवन मंदिर रोड, इन्दौर (म.प्र.)

Mob. 99931-90140, 99931-40840

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. अश्विनी कुमार द्विवेदी* द्वारा 22-ए, सेक्टर-बी, बख्तावरराम नगर, इन्दौर मो.: 9826042287 से प्रकाशित एवं कविता ऑफसेट प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 7, बेसमेंट नं.-6, क्वालिटी परिकमा, प्रेस काम्प्लेक्स, जोन-1, एमपी नगर, भोपाल से मुद्रित। प्रकाशित रचनाओ से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा। *समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार।